

# নবীনজ্যোতি



## NABINCHANDRA COLLEGE MAGAZINE

### 2010-2011

### নবীনচন্দ্র কলেজ পত্রিকা

### ২০১০-২০১১





Page 63

# NABINJYOTI



## EDITORIAL BOARD

**Dr. BISHNU CH. DEY**  
Assistant Prof. Deptt. of Bengali  
N.C. College, Badarpur

**Dr. MORTUJA HUSSAIN**  
Associate Prof. Deptt. of English  
N.C. College, Badarpur

**SRI SOUMITRA CHOUDHURY**  
Assistant Prof. Deptt. of Economics  
N.C. College, Badarpur

**SANKAR KR. CHAKRABORTY**  
Associate Librarian  
N.C. College, Badarpur

Devika Mazumder  
H.S. 1st year (Commerce)

Tanuka Dasgupta  
H.S. 1st year (Arts)

Rajesh Kumar Das  
T.D.C. III year (Arts)

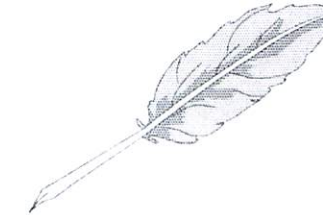


## EDITORIAL

It is a great pleasure to bring out this year's College Magazine with a new name "**Nabinjyoti**". The present name is completely commensurate with the name of the college. This magazine is a reflection of the literary, socio-economic and scientific works that is being done in the college. Various articles from teachers and students have been incorporated highlighting on literary, scientific and socio-economic condition of the country. Many poems have found place which are of different taste.

I convey my sincere gratitude to all the teachers and students for helping us to bring out this magazine. Utmost care have been taken to include all the writings with no error, but still for any error responsibility will be shouldered by me.

Thanking You



**Soumitra Choudhury**  
Member  
Editorial Board

সকল অধ্যাপক-অধ্যাপিকা,  
গ্রাহ্যগারিক, শিক্ষাকর্মী, অতিথিবক,  
ছাত্র-ছাত্রী সকলের প্রতি রইল আন্তরিক শুভেচ্ছা।  
সকলে সুস্থ ও স্বস্থ থাকুন এই কামনা রইল।।

বিনীত :

কলেজ কর্তাপক্ষ  
নবীনচন্দ্র কলেজ, বদরপুর।

## অধ্যক্ষের কলম



গত বছর ‘অধ্যক্ষের কলম’এ লিখেছিলাম— কলেজ শিক্ষার্থীর অন্তর্লীন সৃজনশক্তির অভিব্যক্তি ও বিকাশের মাধ্যম হিসেবে কার্যকরী ভূমিকা পালন করে কলেজ পত্রিকা। আজ যারা ছাত্র, তারাই আগামীদিনের কবি-সাহিত্যিক। এই সম্ভব কবি-সাহিত্যিকের রচনার হাতেখড়ি কলেজ পত্রিকা হওয়াটাই বাঞ্ছনীয়। প্রতিটি বৃক্ষবীজের অঙ্কুরোদগমের একটা সঠিক সময় থাকে। শিক্ষার্থীর মধ্যে যে সম্ভাবনার বীজ নিহিত রয়েছে তার অঙ্কুরোদগম যদি সঠিক সময়ে না হয়, তা হলে সে বীজের মহীক্ষণে পরিণত হওয়ার সুযোগ নিতান্তই সীমায়িত হয়ে পড়ে। উচ্চশিক্ষা পর্ব সমাপনান্তেই যে সৃজনশীল সাহিত্যকর্মে মনোনিবেশ করতে হবে, এমন ধারণা নিতান্ত অমূলক। সাহিত্য রচনা কর্মের শুভারম্ভ ছাত্রাবস্থায়ই অবশ্যকৃত।

বছরান্তে আবারও লিখতে বসে মনে হচ্ছে উপরোক্ত আবেদনটি ছাত্রছাত্রীকে সাহিত্যকর্মে উদ্বুদ্ধ করতে তেমন ফলপ্রসূ হয়নি। কেননা এবারের পত্রিকাটির সম্পাদনা ও প্রকাশনার দায়িত্বপ্রাপ্ত শিক্ষকরা যে বিষয়টি নিয়ে আক্ষেপ ব্যক্ত করেছেন, তা হল প্রকাশযোগ্য লেখার অপ্রতুলতা। দেখাযাচ্ছে, পত্রিকা প্রকাশে আর্থিক অনটনের চেয়ে লেখার অপ্রতুলতাই প্রধান প্রতিবন্ধক হয়ে দাঁড়িয়েছে। সরকারি অর্থানুকূল্য সত্ত্বেও ভাল পত্রিকা বের করা সহজসাধ্য হচ্ছে না।

আসলে বর্তমান প্রজন্মের মধ্যে শিক্ষাপ্রতিষ্ঠানে পাঠ্যসূচির বাইরে কোনও গল্প-কবিতা-প্রবন্ধ-নিবন্ধ পড়ার ক্ষেত্রে চরম অনীহা ক্রমশই প্রকটতর হচ্ছে। পড়ার প্রতি অনীহার কারণেই তাদের মধ্যে লেখালেখির প্রতি অনুদ্যম তীব্রতর হয়ে উঠেছে।

গল্প-কবিতা-প্রবন্ধ-নিবন্ধ পাঠ একধরনের অবসর বিনোদনই বটে। তবে আজকাল অবসর বিনোদনের পুরো জায়গাটাই চলে গেছে টেলিভিশন, মোবাইল আর ইন্টারনেটের আবাসিত দখলে। তাই গল্প-উপন্যাস-কবিতা-প্রবন্ধ একান্তই ব্রাত্য। আর এই কারণেই ছাত্রছাত্রীর মধ্যে জাগরিত হচ্ছে না লেখালেখির প্রবণতা ও অভ্যাস। বিষয়টি যে অতিশয় অনাকাঙ্ক্ষিত ও অনভিপ্রেত, তাতে সন্দেহের অবকাশ নেই।

তা সত্ত্বেও আমরা আশা করব, সাহিত্যকর্মে ছাত্রছাত্রীর এই অনীহা ও অনুদ্যম নিতান্তই সাময়িক। সাহিত্যের প্রতি তাদের আগ্রহ অনতি ভবিষ্যতে বৃদ্ধি পাবে এবং তারা নিজেরাও লেখালেখির মাধ্যমে নিজেকে ও সমাজকে ঋদ্ধ করবে।

যাবতীয় প্রতিকূলতা অতিক্রম করে যাঁদের ঐকান্তিক প্রচেষ্টায় পত্রিকাটির সফল প্রকাশ সম্ভব হয়েছে, সম্পাদক মণ্ডলীর সেই সব সদস্যদের জানাই আন্তরিক ধন্যবাদ।

পরিশেষে আশা করি, ‘নবীনজ্যোতি’-র নতুন আলোকে ছাত্র ছাত্রীর অন্তর্লীন সৃজনশক্তির সার্থক উন্মীলন ঘটবে।

অরুণ কুমার সেন  
অধ্যক্ষ (ভারপ্রাপ্ত)

## STAFF OF NABIN CHANDRA COLLEGE, BADARPUR ACADEMIC SESSION 2010-2011

### ADMINISTRATIVE STAFF

Sri Arun Kumar Sen, M.A. : Principal i/c

### FACULTY OF ARTS

#### Department of Arabic

1. Dr. Mahtabur Rahman, M.M, M.A, Ph.D. : Asstt. Prof. & Head of the Deptt.  
2. Dr. Fazlur Rahman Laskar, M.M., M.A. (G. Medalist), Ph.D. : Asstt. Prof.  
3. Abu Tahir Mahmood, M.A (G. Medalist), M. Phill. : Asstt. Prof.  
4. Md. Hussain Ahmed, M.A. (NET) M.Phill, PGDTA : Part-time Asstt. Prof.

#### Department of Bengali

1. Dr. Bishnu Chandra Dey, M.A. (NET), Ph.D, Dip in Journalism : Asstt. Prof. & Head of the Deptt.  
2. Dr. Arjun Chandra Debnath, M.A, M.Phill, Ph.D. : Asstt. Prof.  
3. Dr. Barnasree Bakshi, M.A, M.Phill, Ph.D. : Asstt. Prof.  
4. Miss Sushmita Nath, M.A, M.Phill : Part-time Asstt. Prof.  
5. Md Imdadur Rahman, MM, MA : Part-time Asstt. Prof.

#### Department of Economics

1. Sri Arun Kumar Sen, M.A. : Asstt. Prof. & Head of the Deptt.  
2. Sri Ananta Pegu, M.A. (NET) : Asstt. Prof.  
3. Sri Soumitra Choudhury, M.A. (NET) : Asstt. Prof.  
4. Dr. Nazim Uddin Khadem, M.A. (G. medalist), Ph.D. : Asstt. Prof.  
5. Miss Anuradha Singh, M.A. : Part-time Asstt. Prof.

#### Department of English

1. Sri Tapan Kumar Chakraborty, M.A. : Asstt. Prof.  
2. Sri Rajat Bhattacharja, M.A., M.Phill, DCE, PGDTE : Associate Prof. & Head of the Deptt.  
3. Dr. Paulore. V.D., M.A., M.Phill, PGDTE, Ph.D. : Associate Prof.  
4. Dr Mortuja Hussain, M.A., Ph.D. : Associate Prof.

#### Department of History

1. Sri Sontosh Kumar Dey, M.A. : Associate Prof. & Head of the Deptt.  
2. Md. Monjural Haque, M.A., M.Phill. : Asstt. Prof.

#### Department of Political Science

1. Sri Debajyoti Dasgupta, M.A., LL.b. : Asstt. Prof. & Head of the Deptt.  
2. Ms. Babli Paul, M.A., M. Phill, LL.b. : Asstt. Prof.  
3. Sri Maheswar Deka, M.A. (SLET) : Asstt. Prof.  
4. Sri Joy Prakash Sarma, M.A. : Part-time Asstt. Prof.



**FACULTY OF COMMERCE**

**Department of Commerce**

1. Joynal Abedin Tapader, M. Com.	: Asstt. Prof. & Head of the Deptt.
2. Md. Hedayatullah Choudhury, M. Com. PG Dip. in Journalism & Mass Comm.	: Asstt. Prof.
3. Ms. Nandita Dutta, M. Sc. (Maths), M.Phil	: Asstt. Prof.
4. Md. Ikbal Uddin Tapadar, M. Com.	: Asstt. Prof.
5. Sri Kajal Kanti Nath, M. Com.	: Asstt. Prof.
6. Ms. Maumita Nath, M.Com	: Tutor
7. Sri Kartik Bhattacharjee	: IT Consultant

**FACULTY OF SCIENCE**

**Department of Science**

1. Md. Nurul Huda Choudhury, M. Sc. (Physics), B.Ed.	: Asstt. Prof.
2. Md. Bilal Ahmed, M. Sc. (Chemistry)	: Asstt. Prof.
3. Sri Biplab Karmakar, M. Sc. (Maths)	: Asstt. Prof.
4. Miss Supriya Das, M. Sc. (Ecology & Envrl. Sc.)	: Asstt. Prof.
5. Sri Digambar Shil, M. Sc. (G. Medalist) (Ecology & Envrl. Sc.)	: Part-time Asstt. Prof.
6. Dr. Anjam Hussain Barbhuiya, M. Sc, Phd (Life Science)	: Part-time Asstt. Prof.
7. Afzal Hussain Sheikh, M. Sc (Chemistry)	: Part-time Asstt. Prof.

**LIBRARY SECTION**

1. Sri Sankar Kumar Chakraborty, M.A (Bengali), M. Lib & Inf. Sc., M.Phil	: Associate Librarian
2. Sri Barun Kanti Paul, B.A.	: Library Asstt.
3. Sri Sandip Chakraborty, B.A.	: Library Bearer.

**YOGA AND GYMNASIUM STAFF**

1. Md. Miftaul Islam
----------------------

**OFFICE STAFF**

1. Sri Debasish Chakraborty	: Head Office Asstt.
2. Sri Sekhar Das	: Office Asstt.
3. Md. Abdul Hakim	: Office Asstt.
4. Sri Kaushik Chakraborty	: Office Asstt.
5. Sri Sudarshan Chakraborty	: Honry. Office Asstt.
6. Md. Safique Uddin Ahmed	: Gr. IV (Head Peon)
7. Md. Luthfur Rahman	: Gr. IV
8. Sri Bimal Paul	: Gr. IV
9. Sri Amal Das	: Gr. IV (Night Guard)
10. Sri Debasish Das	: Gr. IV (Day Guard)
11. Sri Rajendra Basfor	: Gr. IV
12. Ms. Debi Rani Dharkar	: Gr. IV
13. Sri Suman Das	: Gr. IV

**সূচি**

● শিক্ষাদান ও গ্রহণে উন্নত তথ্যপ্রযুক্তির ব্যবহার	: শঙ্কর কুমার চক্রবর্তী	: 1
● স্তনদায়িনী : নারীর বহুস্থরিক রূপের উদ্ঘাটন	: বিষ্ণু চন্দ্র দে	: 3
● জীবনের জন্য জল	: শ্রী সৌমিত্র চৌধুরী	: 7
● প্রতিকার	: সুস্মিতা নাথ	: 9
● দূরদর্শনে	: কান্তি দে লস্কর	: 10
● কাক কোকিল	: রূপা সেন	: 10
● শাওনের শেষে	: প্রণয় রায়	: 10
● নকল	: হাসিনা সুলতানা চৌধুরী	: 11
● ধন্য আমার গুরুজন	: শহিদুল ইসলাম	: 11
● নতুন দিনের গানে	: রসিদা হক	: 12
● প্রথম চাওয়া	: স্মিতা দাস	: 12
● নরী	: ঝরনা রানি দাস	: 13
● প্রদূষণ	: অনামিকা পাল	: 13
● দুর্গাপূজা	: সুরভি চক্রবর্তী	: 14
● প্রিয়তমা	: সুমিত দেব	: 14
● প্রথম দেখা	: সুতপা ভট্টাচার্য	: 15
● কিছু মানুষ গরিব হয়	: নমিতা দাস	: 15
● মায়ের কোলে লক্ষ্মীসোনা হয়ে থাকব	: তনুকা দাশগুপ্ত	: 16
● একাকী পথ চেয়ে বসে থাকা	: সপ্তমী দাস	: 16
● মনের ধারণা	: পল্লী রায়	: 16
● বই না থাকলে কি হতো	: আব্দুল হামিদ	: 17
● গোড়ায় গলদ	: ত্রিদিপ ভট্টাচার্য	: 18
● Achievement	: Dr. Paulose V.D	: 19
● Our English in a UG English literature Course	: Rajat Bhattacharya	: 20
● Global Warming, Climate Change and Food Problem	: Arun Kumar Sen	: 22
● Panchayat System in Ancient India	: Santosh Kumar Dey	: 25
● Najib Mahfuz : A Brief Sketch	: Dr. Fazlur Rahman Laskar	: 28
● Women and Decision Making : In the Familial Arena	: Babli Paul	: 29
● Rationale of Banking Sector Reform in India	: Hedayatullah Choudhury	: 31
● People's Attitude towards the river Barak : A Study of Badarpur Sub-division, Assam	: Anuradha Singh, Ananta Pegu	: 35



● Positive thinking - A key to success	ঃ Md Iqbal Uddin Tapadar	ঃ 38
● Integrity - A Pillar of Wisdom	ঃ Dr. N.U. Khadem	ঃ 41
● Ibnal-Muqaffa And Kalila Wadimna	ঃ Md Hussain Ahmed	ঃ 42
● Effects of WTO Agreement in Indian Economy	ঃ Md Ekbal Hussain Khadim	ঃ 44
● True Thoughts of Life	ঃ Suriya Y. Laskar	ঃ 45
● Consumer Attitude and Culture Penetrating in our Country	ঃ Md Tahir Ahmed	ঃ 46
● Some Interesting questions	ঃ Suriya Y. Laskar	ঃ 46
● Examination is Cricket Match	ঃ Imdad Hussain	ঃ 47
● Rules of Accounts in my life	ঃ M. Alom Suman	ঃ 47
● How will you succeed	ঃ Sarita Rai	ঃ 48
● The Examination	ঃ Nirma Giri	ঃ 48
● My dream	ঃ Rosalin Sahoo	ঃ 48
● The morning	ঃ Eunice Gomes	ঃ 48
● Luck	ঃ Nirma Giri	ঃ 49
● Education as an Acronym	ঃ S. Jasmin Laskar	ঃ 49
● Mother	ঃ Abdul Mukit	ঃ 49
● To my Seniors	ঃ Payel Dey	ঃ 49

প্রচ্ছদ : পারাদীপ মালাকার, স্নাতক তৃতীয় বর্ষ (কলা)

অলংকরণ : গোষ্ঠ পাখিরা, মেদিনীপুর, পশ্চিমবঙ্গ

মুদ্রণ : অভিষেক প্রিন্টার্স, অম্বিকাপট্টি, শিলচর

### Correspondence

Principal  
Nabin Chandra College  
P.O. Badarpur, Dist - Karimganj  
Phone No. - 03845-268153  
E-mail : n\_ccollege@rediffmail.com  
website : www.nccollegebdr.org

## শিক্ষাদান ও গ্রহণে উন্নত তথ্যপ্রযুক্তির ব্যবহার

শংকর কুমার চক্রবর্তী  
সহযোগী গ্রন্থাগারিক

মহাবিদ্যালয়ের শ্রেণিকক্ষে শিক্ষাদান ও গ্রহণে সঠিক শিক্ষা-মূলক যন্ত্রের ব্যবহার ও মূল্যায়ন হল শিক্ষাক্ষেত্রে আই.সি.টি.র (Information Communication Technology) প্রভাবের একটি গুরুত্বপূর্ণ পদক্ষেপ। আই.সি.টি. শিক্ষাদান ও গ্রহণে যে সব যন্ত্র ব্যবহার করা হয় সে সম্পর্কে তথ্য দেয় এবং শিক্ষাদান ও গ্রহণে আই.সি.টি. ব্যবহারের প্রয়োজনীয়তা ব্যাখ্যা করে।

আই.সি.টি. কি এবং কেন :

ALA Glossary অনুসারে আই.সি.টি.র সংজ্ঞা হল "Information Technology is the application of computer and other technologies to the acquisition, organization, storage, retrieval and dissemination of information" অর্থাৎ তথ্য ও যোগাযোগ প্রযুক্তি হল প্রযুক্তিবিদ্যার এমন একটি শাখা যার মাধ্যমে বৈদ্যুতিক উপায়ে তথ্য সংগ্রহ, সংযোগ, সংগঠন, প্রচার ও বিতরণ করা যায়। রেডিও, টেলিভিশন, ভিডিও, ডিভিডি, টেলিফোন, (দূরভাষ ও চলভাষ) বেতার ব্যবস্থা, কম্পিউটার হার্ডওয়্যার ও সফটওয়্যার, কম্পিউটার নেটওয়ার্কিং, ভিডিও কনফারেন্সিং, ই-মেল ও ব্লগস আই.সি.টি.-র বৃহৎ সংসারের অন্তর্ভুক্ত, তথ্য প্রযুক্তির যুগে শিক্ষাক্ষেত্রে এর প্রয়োগের গুরুত্ব উপলব্ধি করে এই আধুনিক তথ্য ও সংযোগ পদ্ধতিকে শিক্ষার অন্তর্ভুক্ত করা হয়েছে। এই পদ্ধতিকে সঠিক ভাবে ব্যবহার করার জন্য শিক্ষা-নির্ণায়ক, অধ্যক্ষ এবং প্রযুক্তিবিদরা বিভিন্ন ব্যাপারে অনেক সিদ্ধান্ত নিয়েছেন, যেমন :- প্রযুক্তি পরিকাঠামোর দিকে, শিক্ষণ প্রণালীর ব্যাপারে, আর্থিক দিকে, সর্বোপরি পরিকাঠামোগত ব্যবস্থার দিকে। আই.সি.টি. একদিকে নিজেদের যন্ত্র ব্যবহার করে বেতার সংযোগের মাধ্যমে শিক্ষাক্ষেত্রে কাজ করার সুযোগ দেয়। যারা প্রায়শই আই.সি.টি.-র যন্ত্র, পদ্ধতি ও ব্যবস্থাপনার মধ্যে দিয়ে যান তাদের সর্বদা সাহায্য করে থাকে আই.সি.টি.। আই.সি.টি হল শিক্ষা-পরিকল্পক, সংগঠক, নির্ণায়ক, পদ্ধতি পরিচালক।

শিক্ষাক্ষেত্রে আই.সি.টি.র ব্যবহার :

বৃহৎ অর্থে বলতে গেলে, শিক্ষা নির্ণায়ক, সংগঠক এবং গবেষক প্রত্যেকেই শিক্ষা-ক্ষেত্রে আই.সি.টি.-র গুরুত্বপূর্ণ প্রভাব সম্পর্কে একমত। কিন্তু যেটা ভাববার বিষয় তা হল শিক্ষা ক্ষেত্রে আই.সি.টি.-র কতটা পরিশীলিত ব্যবহার হওয়া উচিত এবং বাস্তবে তা কতটা পূরণ করা সম্ভব।

তথ্য লেখা, রিপোর্ট তৈরি, শিক্ষামূলক পত্রিকার সাথে অন-লাইন সংযোগ, ওয়েবসাইটের মাধ্যমে সংবাদপত্র পাঠ, ই-বুক, ই-জার্নাল পাঠ (মহাবিদ্যালয় গ্রন্থাগারে যা Information Library Network and List Programme এর অন্তর্ভুক্ত) যা শিক্ষা ক্ষেত্রে আই.সি.টি.র প্রভাবকে ব্যক্ত করে এবং মহাবিদ্যালয়ে প্রযুক্তির ব্যবহার কিভাবে হবে তা নির্ণয় করে।

দৈনন্দিন কাজে তথ্য-প্রযুক্তির ব্যবহার :

তথ্য প্রযুক্তি পরিচালনার পদ্ধতি, পরিকল্পনা এবং প্রযুক্তির বাস্তব ব্যবহারের ইতিহাস—সারা বিশ্বের বিস্তারের গল্প, সফলতা ও ব্যর্থতা থেকে সংগ্রহ করা হয়। নিম্নে বিষয়গুলোকে একক বা সংযুক্ত রূপে দেখানো যেতে পারে।

- বিভিন্ন শ্রেণিতে শিক্ষা।
- শিক্ষামূলক চ্যানেল।
- শিক্ষামূলক বেতার।
- বেতারের মাধ্যমে পরিচালন।
- বিস্তারের জন্য গ্রন্থাগার।
- প্রযুক্তি ও বিজ্ঞানের বাস্তব ব্যবহার।
- গণ-মাধ্যমের ব্যবহার।
- শিক্ষক তৈরিও কাজের সময়ে প্রশিক্ষণ।
- সংগঠন, প্রস্তুতি ও তথ্য সংগ্রহের প্রযুক্তি।
- মহাবিদ্যালয় প্রযুক্তি।



## আজকের প্রযুক্তি :

বিভিন্ন জায়গায় কি ধরনের প্রযুক্তি ব্যবহৃত হচ্ছে তা থেকে শিক্ষা নেওয়া।

ক) পরিকল্পনা মাফিক কাঁচামাল।

খ) গণমাধ্যম।

গ) শিক্ষামূলক ওয়েবসাইট।

ঘ) সংযোগের বিভিন্ন দিক।

## রেডিও ও টেলিভিশন :

বিংশ শতাব্দী থেকে রেডিও টেলিভিশন শিক্ষাক্ষেত্রে ব্যাপকভাবে ব্যবহৃত হচ্ছে। এক্ষেত্রে আই.সি.টি.-র ব্যবহার তিনভাবে হয়ে থাকে।

১) শ্রেণিকক্ষে যেখানে রেডিও ও টেলিভিশনের মাধ্যমে শিক্ষাদান করা হয়।

২) মহাবিদ্যালয় শিক্ষা প্রচারে যেখানে এমন পদ্ধতির সাহায্যে শিক্ষা দেওয়া হয় এবং এমন প্রযুক্তি শেখানো হয় যা অন্য কোথাও পাওয়া যায় না।

৩) সাধারণ শিক্ষা প্রযুক্তি যা সাধারণ তথ্য নির্ভর শিক্ষার সুযোগ দেয়।

## শিক্ষাক্ষেত্রে রেডিও ও টেলিভিশনের সম্প্রচার :

সংযোগমূলক রেডিও সম্প্রচার (আই. আর. আই) দৈনিক প্রায় ২০-৩০ মিনিট শ্রেণিকক্ষে তৈরি শিক্ষা সম্প্রচারকে বোঝায়। রেডিও-র মাধ্যমে কম সুবিধায়ুক্ত অঞ্চলে বিভিন্ন বিষয়ের নির্দিষ্ট স্তরের উপর যেমন অঙ্ক, বিজ্ঞান, স্বাস্থ্য এবং ভাষা—জাতীয় ও আন্তর্জাতিক স্তরে, যা নিয়মিতভাবে শ্রেণিকক্ষে শিক্ষার মান বৃদ্ধিতে সহায়তা করে। ভারত ও দক্ষিণ এশিয়ার দেশগুলিতে আই.আর.আই কার্যকর হয়েছে। অন্যান্য শিক্ষামূলক সংস্থার থেকে আই.আর.আই এ পার্থক্য হল প্রথাগত ও অপ্রথাগত দুধরনের শিক্ষাতেই শিক্ষার মান ও পরিধি বাড়ানো এর প্রাথমিক উদ্দেশ্য।

কেন্দ্রীয় টেলিভিশন অনুষ্ঠান বেতারের সাহায্যে একই পদ্ধতিতে সর্বত্র কাজ করার জন্য সারা দেশে সম্প্রচারিত হয়। প্রত্যেক ঘণ্টায় বিভিন্ন নির্দিষ্ট বিষয় তুলে ধরা হয় এবং শিক্ষামূলক তথ্য দেওয়া হয়। শিক্ষার্থীরা বিভিন্ন ধরনের শিক্ষকের সাথে পরিচিতি লাভ করে। নিয়ম কানুন শিক্ষার জন্য একান্ত গৃহশিক্ষক ও থাকেন। চীন দেশে ৪৪টি রেডিও এবং টিভি বিশ্ববিদ্যালয় আছে। ইন্দোনেশিয়ার চীরবুকা বিশ্ববিদ্যালয় এবং ইন্দ্রা গান্ধী জাতীয় মুক্ত বিশ্ববিদ্যালয় রেডিও ও টেলিভিশন শিক্ষার প্রচলন করেছে, প্রথাগত ও দূরশিক্ষা উভয় ক্ষেত্রেই এই সম্প্রচার অনেকদূর প্রসারিত হয়েছে। এই সম্প্রচার প্রায়ই প্রধানত ছাপার অক্ষরে প্রকাশিত হয় অথবা বেতারে সম্প্রচারিত হয়।

শিক্ষা সমাজকে শিক্ষার্থীকেন্দ্রিক করে তোলার পেছনে আই.সি.টি.-র প্রভাব গবেষণায় দেখা গেছে যে আই.সি.টি.-র ব্যবহার ২১ শতকে শিক্ষার সামগ্রিক উন্নতিতে যথেষ্ট সহায়তা করবে। সঠিক পরিকল্পনা আই.সি.টি.-র শিক্ষা পদ্ধতিতে জ্ঞানবর্ধক ও শক্তিবর্ধক করতে পারে যা শিক্ষার্থীকে সারাজীবন সাহায্য করবে। আই.সি.টি.-র কম্পিউটার ও নেটওয়ার্কিং যদি সঠিক ভাবে করা হয় তবে প্রথাগত ছাত্র-শিক্ষক শিক্ষা পদ্ধতিকে আরো উন্নত ও আধুনিক করা সম্ভব হবে। এই পদ্ধতিতে শিক্ষাদান ও গ্রহণ, সম্পূর্ণ সংগঠিত পদ্ধতিতে হবে এবং তা হবে শিক্ষক কেন্দ্রিক ক্ষতিকারক ছাত্রকেন্দ্রিক নয়।

আই.সি.টি. পরীক্ষার জন্য শিক্ষণীয় যন্ত্র, তথ্য গণনা এবং তার বিশ্লেষণ এবং এরপর ছাত্রদের তথ্য গঠন, সংগ্রহ খোঁজার ব্যাপারে সাহায্য করে। শিক্ষার্থীরা নিজেদের মতো করে শিক্ষা নেয়। তাদের শিক্ষা স্বল্পস্থায়ী হয় না, এটা হয় দীর্ঘস্থায়ী এবং গভীর যা তাদের জীবনে অসুবিধা থেকে মুক্তিতে সাহায্য করে। এইভাবে আই.সি.টি. শিক্ষার পচন রোধ করে শিক্ষার প্রতি শিক্ষার্থীর মনোযোগ বৃদ্ধিতে সহায়তা করে।

আই.সি.টি. শিক্ষার্থী, শিক্ষক ও শিক্ষার পরিবেশের মধ্যে সংযোগ ঘটিয়ে শিক্ষা দান করে। এই শিক্ষা পদ্ধতি প্রকৃত পার্থক্য শিক্ষাদানের পাশাপাশি বিভিন্ন সংস্কৃতির সাথে পরিচয় ঘটিয়ে শিক্ষার্থীর শিক্ষার পরিধির সাথে সাথে যোগাযোগ ক্ষমতাকে বাড়ায় এবং জ্ঞানকে ঋদ্ধ করে। এটি শিক্ষার বিভিন্ন দিকে শিক্ষার্থীর বিকাশ ঘটায়।

আই.সি.টির শিক্ষা নির্ভর করে—কিভাবে শিক্ষা দেওয়া হচ্ছে এবং কি জন্য দেওয়া হচ্ছে তার উপর। এই শিক্ষা পদ্ধতির প্রধান অসুবিধা হল এটি এখনো কোনো লাভজনক প্রয়াস দেখাতে পারেনি ছাত্রকেন্দ্রিক শিক্ষা ব্যবস্থার। পরিশেষে বলা যায়, যখন শিক্ষা প্রযুক্তি নির্ভর হয় তখন বোঝা যায় না কোনো প্রকল্পের সফলতার মূল কারণ প্রযুক্তি না অন্য কোনো ব্যাপার, না কি দুটির সমন্বয়।

## তথ্য সূত্র :

১) ইউনিভার্সিটি নিউজ খণ্ড ৪৮ সংখ্যা ৩৪ আগস্ট ২৩-২৯, ২০১০।

২) ওয়েবসাইটঃ ডব্লিউ ডব্লিউ ডব্লিউ. আইএনডিজি. ইন।■

## “স্তনদায়িনী : নারীর বহুস্বরিক রূপের উদঘাটন”

বিষ্ণু চন্দ্র দে

সহকারী অধ্যাপক, বিভাগীয় প্রধান, বাংলা বিভাগ

বাস্তব অভিজ্ঞতাসম্পন্ন জীবন কাহিনির নগ্ন রূপায়ণের গল্পকার হিসেবে মহাশ্বেতা দেবীর পরিচয় যুক্তিযুক্ত। নারীর অন্তরের কথা, নারীর সমস্যার কথা, নারীর আত্মত্যাগের কথা — একজন নারী লেখকের পক্ষে উন্মোচন করা অনেকটাই সহজ। সেই রকমই নারী জীবনের বিভিন্ন দিকের রহস্য উদঘাটনের বিখ্যাত গল্প মহাশ্বেতা দেবীর ‘স্তনদায়িনী’। গল্পটি ১৯৭৭ খ্রিস্টাব্দে ‘এক্ষণ’ পত্রিকার শারদীয় সংখ্যায় প্রকাশিত হবার সঙ্গে সঙ্গে পাঠক ও সমালোচক মহলে আলোড়ন সৃষ্টি করে।

বিশ শতকের বাংলা কথা-সাহিত্যের প্রতিবাদী ধারার অন্যতম লেখক হিসেবে মহাশ্বেতা দেবীর নাম চিহ্নিত হয়ে থাকে। তিনি দীর্ঘদিন সাংবাদিকতার কাজে নিযুক্ত ছিলেন বলে বাস্তব জীবনকে দেখেছেন একেবারে কাছ থেকে। সেই সঙ্গে মানুষের মনের গহনে ডুব দিয়ে তার অন্তরের গোপনতম রহস্য উদঘাটনের বিদ্যা দক্ষতার সঙ্গে আয়ত্ত্ব করতে সক্ষম হয়েছেন মহাশ্বেতা দেবী।

সামাজিক ক্ষেত্রে সমস্ত লেখক-শিল্পীরই দায় থাকে মানুষের কঠোর জীবনকে উন্মোচন করার। ১৯৮৪-তে ‘স্তনদায়িনী’ সম্পর্কে মহাশ্বেতা দেবী লিখেছেন— “... ‘স্তনদায়িনী’-র যশোদাকে পশ্চিমবঙ্গ বলে মনে করে লিখেছি।” গল্পটিকে ব্যঞ্জনার প্রেক্ষিত দেখলে বোঝা যায় — পশ্চিমবঙ্গ হল যশোদারূপী মা, যে তার ধ্বংসের শেষ সীমায় এসে পৌঁছয়। ১৯৯৩-তে মহাশ্বেতা আবার লেখেন — “... ‘স্তনদায়িনী’-র যশোদাকে ছ’মাস আগে বাস্তবে জানলাম। সে সাতবাড়ি বি- খেটে নিজের ও সতীনের সন্তানের পালন, সতীন, অপদার্থ স্বামী, সকলের অন্ন জুগিয়ে যাচ্ছে, নিজে ক্ষয় হয়ে যাচ্ছে, বাস্তবের এমন ভিত্তি খুঁজে পেয়ে আমার অবাস্তব লেগেছিল।”

‘স্তনদায়িনী’ গল্পে যে সমস্ত ঘটনা মুখ্য হয়ে উঠেছে, কিংবা যে সমস্ত বিষয় গল্পের মধ্যে প্রত্যক্ষ হয়ে দেখা দিয়েছে তার প্রধান প্রধানগুলো হল :

- ১) পুরুষদের বহুগামিতা।
- ২) অশিক্ষার চূড়ান্ত পর্যায়।
- ৩) নারীদের যৌবন ধরে রাখার প্রবল উদ্যম।
- ৪) নারীদের সন্তান প্রতিপালনের প্রতি অনীহা।
- ৫) প্রাচীন সংস্কারের প্রতি আস্থা।
- ৬) স্বামী স্ত্রীতে আন্তরিকতা স্বার্থগত।
- ৭) নারীদেরকে ফল গাছের সঙ্গে তুলনা করা।
- ৮) যৌথ পরিবার ভাঙনের করুণ বার্তা।
- ৯) অর্থাভাবে স্তন্য-দুগ্ধ বিক্রয় করা।
- ১০) জনবলের আকাজক্ষা।
- ১১) কর্ম সংস্থান পরিবর্তনের প্রবল চেষ্টা।
- ১২) শহরমুখী জীবনের প্রতি আকর্ষণ।
- ১৩) সুপ্ত হৃদয়ে মাঝে মাঝে প্রতিবাদ চিন্তার জাগরণ।
- ১৪) ঈশ্বরে বিশ্বাস, ইত্যাদি।

‘স্তনদায়িনী’ গল্পের কেন্দ্রীয় চরিত্র যশোদা। সে জীবিত ও মৃত মিলে সর্বমোট কুড়িটি সন্তানকে গর্ভে ধারণ করেছে। তার স্বামী কাঙালিচরণ। সে ভারি যৌবনা কম বয়সী ও সুবর্তুল স্ত্রীত স্তনের অধিকারিণী যশোদাকে বিয়ে করে আনে। তাই যশোদার স্তন নিয়ে তার সোহাগ, এবং ভালোবাসা। যুবতী স্ত্রীর স্তনের আকর্ষণেই কাঙালিচরণ ঘুরে ফিরে যশোদার পাশে এসে আশ্রয় নেয়। নইলে সেই সময় ঘরের ছেলেরা বাড়িতে বউ থাকতেও বি ও রান্নার মাসীদের ওপর নজর দেয় এবং উপভোগ করে।



যশোদা চরিত্রের দিক থেকে পবিত্র। কিন্তু সে পেশাদার স্তনদায়িনী। গল্পকারের ভাষায়— “যশোদা পেশাদার জননী, প্রফেশন্যাল মাদার।” এরজন্য দায়ী হালদারবাবুদের ছোট ছেলে। তাদের বাড়ির নতুন জামাইয়ের স্টুডিবেকার গাড়ি দিয়ে কাঙালিচরণকে ধাক্কা দিলে সে কোনো মতে বেঁচে গেলেও তার পা দুটো ভেঙে যায় এবং পরে কেটে ফেলা হয়। হাসপাতাল থেকে তাকে ক্রাচ বগলে বাড়ি ফিরতে হল। কাঙালিচরণ এখন অকেজো। সংসার চালানোর দায়িত্ব নিতে হল যশোদাকে।

মায়ের মন্দিরে যশোদা স্বামীর সূস্থতার জন্য প্রার্থনা করেছে। অবশেষে একদিন স্বপ্নে ধাইয়ের বেশে দেবী সিংহবাহিনী এসে যশোদাকে অভয় দিয়ে বললেন— তার স্বামী বাড়ি ফিরবে। কাঙালি এখন আর কাজ করতে পারে না, তাই বাড়িতে থাকে। হালদারগিম্মির কৃপায় যশোদা সেই বাড়ির দুধ-মা। গ্রামে বিত্তশালী ও যৌথ পরিবার হিসেবে হালদার বাড়ির অনেক নাম। তাই যৌথ পরিবারে অনেকগুলো বউ। হালদার বাড়ির রীতি অনুসারে বউরা যাতে প্রতি বৎসর একটা করে সন্তান প্রসব করতে পারে এবং সেই সন্তানদের দুগ্ধ পান করাতে গিয়ে তাদের স্তনের আকার ও সন্তান পালনের কাজে শরীর যাতে ভেঙে না যায়, তাই যশোদাকে পেশাদার দুধ-মা হিসেবে নিযুক্ত করলেন গিম্মিমা। যশোদা নিরুপায়। পেটের দায়ে সে এই কঠোর ও পুণ্যের কাজে নিজেকে আত্মসমর্পণ করল। কিন্তু স্তনে দুধ আনতে গেলে তাকেও প্রতি বৎসর একটা করে সন্তান জন্ম দিতে হবে। এরজন্য যশোদা কাঙালিচরণকে মানিয়ে নিয়েছে। তার শরীর এ ব্যাপারে সায় দেয় কি না সে চিন্তা করার ইচ্ছা যশোদার নেই। যশোদার স্তন হুস্টপুস্ট হওয়ার ফলে প্রচুর দুধ হত তাতে। তাই সে কোনো কোনো সময় এক সঙ্গে তিনটি সন্তানকে স্তন্য দিয়েছে।

যশোদা কখনো মাতৃত্ব হওয়া থেকে নিজেকে দূরে সরিয়ে রাখার চেষ্টা করেনি। সে নিজের স্তন দুটিকে নিয়ে বড় গর্ববোধ করে।

হালদার গিম্মিমাও তেরোটি সন্তান। মেয়েদের বিয়ে হয়ে গেছে। ছেলেরাও বিবাহিত। হালদার বাড়িতে যশোদা এখন ভগবতী। যশোদার দুগ্ধসঞ্চয়ে যাতে কোনো ধরনের বিঘ্ন না ঘটে সে দিকে হালদারগিম্মির কড়া নজর রইল। তিনি কাঙালিচরণকে আদেশ দিলেন বাড়িতে রান্না-বান্নার দায়িত্ব নিতে। সারাদিন রান্নাবান্না কষ্টের ব্যাপার। অবশেষে অনেকের যুক্তি ও বিবেকের পরামর্শে কাঙালিচরণ নিরীহের মতো সব মেনে নিল।

এখন কাঙালিচরণ অনেক ভালো ভালো রান্না জানে। এদিকে দেবী সিংহবাহিনীর প্রসাদী পাঁঠার মাথার রান্না খাইয়ে একগুঁয়ে সাহসী মাতাল নবীনকে সে হাত করে নিয়েছে। তারফলে নবীন কাঙালিচরণকে নকুলেশ্বর মন্দিরে পুরোহিতের (পাণ্ডা) কাজ পাইয়ে দিল। প্রত্যহ মন্দিরে পুণ্যার্থীদের ধরে এনে ঈশ্বর দর্শন করিয়ে মোটামুটি ভালই রোজগার করে। যশোদাও হালদার বাড়িতে তৈরি ‘ভাত-বাঞ্জন’ খেয়ে দিন দিন আরো স্বাস্থ্যবতী ও সুন্দরী হয়ে উঠল। দেবী ভগবতীর সঙ্গে তুলনা করে সবাই যশোদাকে শ্রদ্ধা করে। সেই সুবাদে তার উপযুক্ত কন্যা গুলোর তাড়াতাড়ি বিয়ে হয়ে গেল। যশোদার ছেলেদেরকেও সবাই সুদৃষ্টিতে দেখে। একটু বড় হলে যশোদার ছেলেরা পইতে নিয়ে মন্দিরে বহিরাগত যাত্রীদের থেকে ভালো অথ উপার্জন করতে লাগল।

হালদার বাড়ির ছেলে বউরা খুশি। তাদের কাজ করতে হয় না। সন্তানদের নিজের স্তন দিতে হয় না। “তাদের গোপালরা যশোদার স্তন্যে লালিত হচ্ছে বলে তাঁরা যথেষ্ট গোপাল হতে পারেন বিছানায়। বউদের ‘না’ বলবার মুখ রইল না। বউরা খুশি। কেননা দেহের ডোলটি ভালো থাকল। তারা যথেষ্ট মেম-কাটের জামা ও বডিস পরতে পারল।” সন্তান পালনের সব কিছুর দায়িত্ব যশোদার। গর্ভদায়িনী মায়ের সন্তান প্রসব করেই দায়িত্ব শেষ। নিজেকে সুন্দর দেখবার জন্যে “ইনজেক্সান” দিয়েও স্তন্যদুগ্ধ শুকিয়ে নিচ্ছে। আধুনিক নারী জাতির প্রতি গল্পকারের এ এক কটাক্ষ।

যশোদাকে সকল ঝি-রা বিশ্বাস করে। সে সাক্ষাৎ ভগবতী। যশোদা দুধ মা-এর দায়িত্ব নেওয়ার ফলে হালদার বাড়ির যুবক কিংবা তাদের বাপ-জ্যাঠা-কাকারা স্ত্রী নিয়ে সুখের লীলায় মেতে থাকতে পারে, তাই কাজের ঝি-মাসীরা তাদের থেকে রক্ষা পেয়েছে।

দুধ মা-এর দায়িত্ব নিয়ে হালদার বাড়িতে যশোদার যখন আগমন ঘটে, তখন তার তিনটি মাত্র সন্তান ছিল। হালদার বাড়িতে যশোদা সতেরোটি সন্তানের জন্ম দেয়। এভাবে তার ত্রিশ বছর কেটে গেল। ততোদিনে হালদার গিম্মিও পরলোকের যাত্রী হয়েছেন। গিম্মিমা প্রাচীনকালের সংস্কার নিংড়ে তাঁর শাশুড়ির মত বউদেরও কুড়িটি করে সন্তান হবার আশা করেছিলেন। “কুড়িটি সন্তান হলে আবার স্বামী-স্ত্রীর বিয়ে হবার নিয়ম ছিল বংশে।” কিন্তু তাঁর পুত্র-বধূরা বারো-তেরো-চৌদ্দোতেই এই অধ্যায়ের সমাপ্তি ঘোষণা করল। স্বামীর সঙ্গে পরামর্শ করে কেউ কেউ হাসপাতালে গিয়ে সন্তান না হবার ব্যবস্থা করে নিল। এই বাড়িতে সংস্কারের গণ্ডি যাতে কেউ পেরিয়ে না যায় সে ব্যাপারে গিম্মিমা তৎপর ছিলেন। তাই ঘরে কোনো বই-পত্র-পত্রিকা ঢোকানো হত

না। চটি পরে ভাত রান্না ও পরিবেশন করা নিষিদ্ধ ছিল। গিম্মিমার মতে হঠাৎ হাওয়া পরিবর্তন হলে বাড়িতে অশান্তি দেখা দেয়। কিন্তু শেষ পর্যন্ত আধুনিকতার বিষবাস্প পরিবারটিকে গ্রাস করে ফেলে।

ধীরে ধীরে ছেলেরা শহরমুখী হল। যৌথ পরিবার ভেঙে ছোট হতে লাগল। এদিকে সিংহবাহিনী মন্দিরের পাণ্ডারা নিজেদের মধ্যে কলহে মত্ত হয়ে উঠল। কে বা কারা দেবীর মূর্তি ঘুরিয়ে দিল। দেবী রুষ্ট হয়েছেন শুনে গিম্মিমা দুঃখে ভারাক্রান্ত হলেন এবং “জ্যেষ্ঠে অসংগত পরিমানে কাঁঠাল খেয়ে দান্তবমি হয়ে তিনি মরে গেলেন।”

গিম্মি মারা গেলে যশোদার দুঃখ বাড়তে লাগল। যশোদার জন্য হালদার বাড়ির ভাত বন্ধ হয়ে গেল। হালদার বাড়িতে এখন অল্প কয়েকটি মাত্র মানুষের বাস।

নকুলেশ্বর মন্দিরে কাঙালিচরণের রোজগার ভালো। কিন্তু কাঙালিচরণের সঙ্গে যশোদার এখন আর বনে না। প্রায়ই ঝগড়া হয়। কেননা যশোদার মধ্যে আগের সেই যৌবন নেই, স্তন শিথিল। রাগে দুঃখে যশোদা ঘর ছাড়ল।

মন্দিরে প্রায়শ্চিত্ত করে দেবীর মুখ ফেরানো হল। এর নায়ক নবীন। দেবীর মন্দিরে যশোদা তার মনের দুঃখ জানানো। সিংহবাহিনী তাকে উপায় বলে দিলেন। তবুও যশোদার এখন কষ্ট। ছেলেরাও বাপকে অনুসরণ করেছে। কাঙালিচরণ বর্তমান গোলাপিকে নিয়ে থাকে। গোলাপির ভাই মস্ত গুণ্ডা। তাই যশোদা এখানে দুর্বল।

একা একা যশোদার ভালো লাগে না। পঞ্চাশটি সন্তানকে দুধ খাওয়াতে খাওয়াতে তার অভ্যাস হয়ে গেছে, কোলের কাছে একটা সন্তান থাকা চাই, নইলে তার ঘুম আসে না। যশোদার কাছে মা হওয়া একটা নেশায় পরিণত হয়ে উঠেছিল। সকল পথ যখন বন্ধ তখন যশোদা আবার আশ্রয় নিল হালদার বাড়িতে। তবে দুধ মা হয়ে নয়, রাঁধুনি হয়ে। যতদিন যশোদা সন্তান জন্ম দিতে পেরেছে ততোদিন সে লক্ষ্মীরূপী নরীর মর্যাদা পেয়েছে। তখন “বাসিনীরা তার পা-ধোয়া জল খেত।” এখন খাবার পর নিজের বাসন মাজতে হয়। হালদার বাড়ির বউ-রা তাকে খোঁটা দেয়, গালাগালি করে। তাই নিরুপায় হয়ে যশোদা গোপনে কাঁদে।

আজকাল যশোদার কাজ ভালো লাগে না। শরীর কেমন কেমন করে। সহায়ক তার কেউ নেই। তবুও সে নিজেকে দুধ মা হিসেবেই ভাবতে ভালোবাসে। প্রত্যহ সবার জন্য রান্না করে, খাওয়ায় কিন্তু নিজে খেতে ভুলে যায়। যশোদা নকুলেশ্বর শিবের কাছে নিজের মৃত্যু প্রার্থনা করে। ধীরে ধীরে সকলে অনুভব করল যশোদা দিন দিন অসুস্থ হয়ে উঠেছে। বামুনের কন্যা বলে কিছু হলে তাদেরকে প্রায়শ্চিত্ত করতে হবে— এই ভয়ে তারা কাতর। যশোদার স্বর অবস্থায় বড় বউ তার খালি শরীর দেখে বলল— “বামুন দিদি! তোমার বাঁও মাইয়ের উপরটা লাল মতো দেখায় ক্যান? ইস! দগদগা লাল!”

ডাক্তারের সন্দেহ যশোদার স্তনের ‘ম্যামারি গ্ল্যাণ্ডে ক্যানসার’ হয়েছে। ডাক্তার বলেছে হাসপাতালে নিয়ে যেতে, কিন্তু যশোদা তাতে সায় দিল না। তার যুক্তি — অনেক সন্তানের জন্ম দিয়েও তাকে হাসপাতাল মাড়াতে হয়নি। কাঙালিচরণ হাসপাতালে গিয়েছিল বলে তার পা কাটা পড়েছে।

এখন যশোদার বয়স পঞ্চাশ। হালদার বাড়ির সকলের ভয় হতে লাগল— দুধ মা বুঝি তাদের ভিটায় মরে, তাই তার স্বামী-সন্তান সবাইকে খবর দেওয়া হল। কাঙালিচরণ তার অপরাধ স্বীকার করে যশোদাকে বাড়ি নিয়ে যাবার প্রতিশ্রুতি দিল। যশোদা কাঙালিচরণের উদ্দেশ্যে হাসপাতালের বিছানায় চোখ বুঁজে অচৈতন্য ভাবে বলতে লাগল — “দুধ দিলে মা হয়, স-ব মিছে কতা! না নেপাল-গোপালরা দেখে, না বাবুর ছেলেরা উঁকি মেরে এট্টা কতা শুধায়।”

নবীনের চেষ্টাতেই যশোদাকে হাসপাতালে আনা হয়েছিল। হরি ডাক্তার বলেছেন যশোদার ক্যানসার হয়েছে। যশোদা আর বাঁচবে না। যশোদা খেতে পারে না, তাই তাকে নল দিয়ে খাওয়ানো হয়। তার স্তন ফেটে হা হয়ে গেছে, তা থেকে পঁচা দুর্গন্ধ বেরোয়। শিশুরা দুধ খাবে বলে একসময় স্তন দুটো সাবান মেখে পরিস্কার করে রাখত যশোদা।

চিকিৎসা পুরোদমে চললেও যশোদা এক অবস্থাতেই আছে। এর থেকে কম আক্রান্ত রোগীরাও আরো আগে মরে। একমাস ধরে মৃত্যুর সঙ্গে লড়াই করে যশোদা হাসপাতালে বেঁচে রয়েছে। যশোদা মাঝে মাঝে একটু আরাম অনুভব করে “এবং দুর্বল ও আক্রান্ত আচ্ছন্ন মস্তিকে মনে হল, হালদার বাড়ির কোনো ছেলেরা কি ডাক্তার হয়েছে?... এই স্তনকে সে ভাতের যোগানদার জেনে নিয়ত গর্ভ ধরে দুধে ভরে রাখত। স্তনের কাজই দুধ ধরা !”

যশোদা মাঝে মাঝে যন্ত্রণায় চিৎকার করে ওঠে। এক রাতে যশোদার হাত-পা ঠাণ্ডা হয়ে এলো। সে বুঝতে পারল— তার মৃত্যু আসন্ন। চোখ খুলতে না পারলেও যশোদা অনেকের স্পর্শ অনুভব করল দুধ মায়ের মনে হল— সে বিশ্বসংসারকে দুধ দিয়েছে। এই তার গর্ব। কিন্তু যশোদা যখন মরল তখন পাশে কেউ ছিল না, মুখে জলও কেউ দিল না। সময় রাত এগারোটো। গ্রামে

বড়োবাবুর বাড়িতে ফোন করল — বাজল না। পরদিন গাড়িতে করে যশোদাকে শাশানে নিয়ে যাওয়া হল। ডোমরা তাকে দাহ করল। বিশ্বসংসারে যিনি দুধ মা তাকে দুধের মূল্য কেউ দিল না। তবুও ‘যশোদার মৃত্যু ঈশ্বরের মৃত্যু’।

আমাদের প্রচলিত বিশ্বাসের মধ্যে লেখিকার এটাই আঘাত যে — এ বিশ্বসংসারে যে যত দেয়, সে ততো হারায়। যে অন্যের সুখ প্রার্থী সে নিজে সুখ থেকে বঞ্চিত হয়। সুখ-দুঃখের, পাওয়া না-পাওয়ার এই মহাপ্রলয়ে যশোদা আদর্শ মায়ের দৃষ্টান্ত। ‘স্তনদায়িনী’তে ফুটে উঠেছে মায়ের দুটি রূপ : এক — যে মা নিজেকে তিলে তিলে ক্ষয় করে একে একে নিজের ও পরের সন্তানকে জীবন দান করে চলেছে। আর এক মা রয়েছেন — যিনি সন্তান প্রসব করেও তাকে স্তন্য দেন না। কেননা এতে স্তনের আকার শিথিল হয়ে সৌন্দর্যের ব্যাঘাত ঘটায়।

গল্পটিতে সুকৌশলে নারীর বিভিন্ন রূপের পরিচয় ফুটিয়ে তুলতে সক্ষম হয়েছেন মহাশ্বেতা দেবী। যে সমস্ত নারীকে গল্পে লক্ষ্য করা যায় তারা হলেন যশোদা, গিন্নিমা, গিন্নি বাড়ির বউরা এবং হালদার বাড়ির ঝি-চাকর-রা। গল্পে যশোদা স্তনদায়িনী অর্থাৎ দুধ মা। হালদারগিন্নি সংস্কার মানা মধ্যযুগীয় রমণী। তিনি নিজে তেরোটি সন্তানের জননী। তার শাশুড়ি কুড়িটি সন্তানের গর্ভধারিণী হয়েছিলেন। ছেলে বউরা কুড়িটি করে সন্তান জন্ম দিক এই তাঁর ইচ্ছা। কিন্তু হালদার গিন্নির ছেলে বউরা একেবারে আধুনিক। নিজের সন্তানদেরকে স্তন্যদুগ্ধ পান করতে না দিয়ে ইনজেক্সন মারফত তারা নিজের শরীরের দুধ শুকিয়ে নিয়েছে। আরো এক ধরনের নারী চরিত্র প্রস্ফুটিত হয়ে উঠেছে গল্পটিতে, তারা হল — হালদার বাড়ির ঝি-চাকর। এরা বড় স্বার্থপর। প্রয়োজনে এরা নিজের সর্বস্ব বিলিয়ে দিতে পারে এবং কখনো পবিত্র সেজে সতী-সাধবী হয়। যারা যশোদাকে এক সময় ভগবতী বলে শ্রদ্ধা করত, তারাই শেষ পর্যন্ত যশোদার দুর্দিনে বাসন মাজিয়েছে, রান্না করিয়েছে, গালা-গালি দিয়েছে, নানা কটু কথা শুনিয়েছে, ইত্যাদি।

গল্পে প্রধান নারী চরিত্র যদি যশোদা হয়, তবে প্রধান পুরুষ চরিত্র কাঙালিচরণ। ‘যশোদা’ ও ‘কাঙালিচরণ’ নাম দুটি অর্থবহ ও যুক্তিপূর্ণ। লেখিকা নাম দুটি নির্বাচনে অনেক গুরুত্ব দিয়েছিলেন বলেই আমাদের দৃঢ় বিশ্বাস। ‘যশোদা’-র আভিধানিক অর্থ— যশোমতী অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণের পালনকারিণী মাতা। ‘কাঙালি’ শব্দের আভিধানিক অর্থ— কাঙাল, ভিক্ষুক, যাচক, অভাবগ্রস্ত, দরিদ্র, অনশনক্লিষ্ট, ইত্যাদি। বাস্তবিক কাঙালিচরণকে গল্পের শুরু থেকে শেষ পর্যন্ত কাঙালই থাকতে দেখা গেছে। অন্যদিকে যশোদা কৃষ্ণের মত বিশ্বসংসার রক্ষাকারী সন্তানদের জননী হয়ে উঠেছে। যে সমস্ত সন্তানরা অভিশপ্ত জীবন নিয়ে জন্ম গ্রহণ করেছে এবং তারফলে তারা মাতৃদুগ্ধ থেকে বঞ্চিত হয়েছে, সেই সমস্ত সন্তানের মাতা যশোদা।

শ্রীকৃষ্ণ যখন বড় হন তখন তিনি মাকে ছেড়ে চলে যান দূরদেশে, মথুরায়। বাস্তব সংসারের দৃষ্টিতে এই ঘটনাকে মাতৃ-দুগ্ধের অপমান মনে হলেও কোনো মা তাঁর মাতৃ-দুগ্ধের বিনিময় কামনা করেন না। বৈষ্ণব পদকারদের মতে কৃষ্ণ মথুরায় চলে গেলে আর প্রত্যাবর্তন করেন নি। ঠিক তদ্রূপ ‘স্তনদায়িনী’ গল্পের যশোদা যাদেরকে স্তন্যদান করেছিলেন, তারাও গ্রাম ছেড়ে দূরদেশে চলে যায়। যশোদার মৃত্যুর দিনও তাদের দেখা মেলেনি। যশোদা অনুভব করেছিলেন — স্তন্যদুগ্ধ দিলেই যথাযথ মা হওয়া যায় না। তাই যশোদা নামের অর্থটি আমাদেরকে যথাযথই আকৃষ্ট করে এবং শ্রদ্ধায় আপ্লুত করে তোলে।

পুরুষ শাসিত সমাজের কোনো ইঙ্গিত এ গল্পে নেই। শুধু পুরুষের বহুগামিতার কথা মাত্র আছে। নারী তার সংস্কারে, ইচ্ছায়, চেষ্টায়, প্রয়োজনে, বিশ্বাসে সন্তান জন্মদেবার প্রতিযোগিতায় অংশ-গ্রহণ করেছিল। এর রেফারী গিন্নিমা। তিনি মারা যেতেই প্রতিযোগিতা বন্ধ। আধুনিকোত্তর চিন্তা-চেতনায় নারী মনোস্তব্ধের দ্বারোদঘাটন করার লক্ষ্যেই বোধহয় মহাশ্বেতা দেবী অনন্যসাধারণ বিষয়কে বেছে নেন। যেখানে নারী মন্দ, সেখানে নারী অন্ধ। যেখানে নারী ঘৃণীয়, সেখানে নারী পূজনীয়। সেই অর্থে নারীর বহুস্বরের পরিচয় ‘স্তনদায়িনী’ গল্পটি। ■

“আমি যদি জাগতিক কিংবা স্বর্গীয় ভাষায় ভাষণ দিই কিন্তু হৃদয়ে আমার প্রেম না থাকে তাহলে আমার কথা কানে তাল লাগানো ঘণ্টা বা করতালের আওয়াজ মাত্র। আমি যদি একজন নারীর মতো কথা বলি, যদি সমস্ত নিগূঢ় তত্ত্ব ও দিব্যজ্ঞানে পারদর্শী হই, যদি পাহাড় টলানোর মতো বিশ্বাস আমার থাকে অথচ হৃদয়ে আমার প্রেম না থাকে তাহলে আমি কিছুই নই। আমার যথাসর্বস্ব যদি বিলিয়ে দিই কিন্তু হৃদয়ে যদি প্রেম না থাকে তাহলে আমার কোনো লাভ নেই।

প্রেম, সহনশীল, মমতাময়। প্রেম ঈর্ষা করে না। গর্বোদ্ধত হয় না, রূঢ় আচরণ করে না, ধৈর্য হারায় না। প্রেম কারও অধর্মাচরণে আনন্দ লাভ করে না। সত্যেই তার পরম প্রীতি। প্রেম অবিচল, সবকিছু বিশ্বাস করে, সবকিছু আশা করে, সর্ব অর্বস্থায় ধৈর্য ধারণ করে।”

— (বাইবেল। ১. করিন্থীয় ১৩ঃ ১-৭)

## জীবনের জন্য জল

সৌমিত্র চৌধুরী  
সহকারী অধ্যাপক, অর্থনীতি বিভাগ

পৃথিবীর চির বিস্ময় বস্তু হল জল, জলই সেই উপাদান যা দিয়ে তৈরি হয়েছে এই বিশ্বের জীবকুলের বৈভব। জীবদেহ গঠনের মূল উপাদান প্রোটোপ্লাজমের নব্বই শতাংশই জল, যে কোনও মা হয়তো রাগ করবেন যদি তাকে বলা হয় যে মাতৃদুগ্ধের নব্বই শতাংশ জল, জীবের সৃষ্টি হয়েছে জলে এবং জীবের ক্রমবিকাশের সঙ্গে জল ওতপ্রোত ভাবে জড়িত। কিন্তু বর্তমান বিশ্বে সবচেয়ে চিন্তা হচ্ছে বিশুদ্ধ জলের যোগান এবং তার ব্যবহার নিয়ে, বলা হচ্ছে তৃতীয় বিশ্বযুদ্ধ যদি সংগঠিত হয় তা হবে জল নিয়ে। জল নিয়ে টানাপোড়েন আমরা শহরের প্রতিটি অলিগলিতে প্রত্যক্ষ করি। এই জল প্রকৃতির একটি মহামূল্যবান দান যেটাকে মানুষ নষ্ট করে ফেলছে। এই বিশ্ব অচিরেই জল সংকটের দিকে ধাবিত হচ্ছে।

রাষ্ট্রসংঘের হিসাব মতে, এই পৃথিবীতে ১৪০০ কিউবিক কিলোমিটার জল আছে যা এই পৃথিবীকে ৩০০০ মিটার নীচে পর্যন্ত ঢেকে রাখতে পারবে। পৃথিবীতে যত জল আছে তার ২.৭ শতাংশ ব্যবহারের যোগ্য, এবং তার ৭৫.২ শতাংশ মেরুপ্রদেশে বরফ হিসেবে, ২২.৬ শতাংশ পাতালে এবং বাকী ২.২ শতাংশ নদী, নালা, খাল, বিলে আছে।

ভারতবর্ষের কাছে সমস্যাটা আরও তীব্রতর। পৃথিবীর ২.৪৫ শতাংশ স্থল ভারতের অধীনে কিন্তু পৃথিবীর ১৬ শতাংশ মানুষের বাস ভারতবর্ষে। এই দেশে যতটুকু জল আছে তার ৭৪ শতাংশ কৃষিকাজে, ১৮ শতাংশ বিদ্যুৎ উৎপাদনে এবং ৮ শতাংশ গৃহকর্মে ব্যবহৃত হয়। আমাদের দেশে গড়ে বৃষ্টিপাত হয় ১১৭০ মিলিমিটার। তার সঙ্গে তুষারপাত এবং বরফ গলে আমরা সর্বমোট ৪০০০ বিলিয়ন কিউবিক মিটার জল পাই। কিন্তু জল বাষ্পীভূত হওয়ার ফলে যা জল আমরা পাই তা হল ১৮৬৯ বিলিয়ান কিউবিক মিটার, কিন্তু এই জলও পুরোপুরি পাওয়া যায় না বিভিন্ন ভৌগোলিক সীমাবদ্ধতার জন্য। ফলত হিসেব করে দেখা গেছে যে ব্যবহারযোগ্য জল যা আমরা পাই তা হল ১১২৩ কিউবিক মিটার যার মধ্যে ৬৯০ বিলিয়ন জল উপরিভাগে পাওয়া যায় এবং ৪৩৩ বিলিয়ন কিউবিক মিটার ভূগর্ভস্থ জল।

মানুষকে বাঁচতে গেলে তো অনিবার্য ভাবেই জল পান, খোয়া, রান্না এবং শৌচকার্য করতেই হবে। আমাদের পৃথিবীর রাষ্ট্রসংঘ বলে দিয়েছে প্রতিদিন প্রতি মানুষের অন্তত ৫০ লিটার জল লাগবেই। সেই হিসাবে ২০১০ সালেই ভারতে সেচের জন্য লাগবে ৬৮৮ বিলিয়ন কিউবিক মিটার জল, পানের জন্য ৫৬ বিলিয়ন কিউবিক মিটার, শিল্পের জন্য ১২ বিলিয়ন কিউবিক মিটার, শক্তির জন্য ৫ বিলিয়ন কিউবিক মিটার এবং অন্যান্য ক্ষেত্রে ৫২ বিলিয়ন কিউবিক মিটার।

২০২৫ এবং ২০৫০ খ্রিস্টাব্দে এই পরিমাপ দাঁড়াবে যথাক্রমে সেচে ৯১০ এবং ১০৭২ বি কি মি, পানের জন্য ৭৩ এবং ১৩২ বি কি মি। শিল্পের জন্য ২৩ এবং ৬৫ বি কি মি, শক্তি উৎপাদনের জন্য ১৫ এবং ১৩০ বি কি মি। অন্যান্য ৭২ এবং ৮০ বিলিয়ন কিউবিক মিটার।

উল্লিখিত তথ্যমতে বিরাট জলরাশির প্রয়োজন ভবিষ্যতে মানুষের অস্তিত্ব রক্ষার্থে। জলের শুদ্ধ ব্যবহার এবং জল সংরক্ষণ করা খুবই জরুরী হয়ে পড়েছে। ভারতবর্ষে ঐতিহাসিক সময় থেকেই বৃষ্টির জল সংরক্ষণ করার জন্য পুকুর, খাল, বিল, জলাশয়, সংরক্ষিত করা হয়েছিল, সব বাড়িতেই পুকুর কেটে জল সংরক্ষণ করার একটি প্রথা ছিল। আমাদের বরাক উপত্যকায়ই কয়েক হাজার বা লক্ষ পুকুর ছিল। কিন্তু বর্তমান শহর ভিত্তিক নাগরিক সভ্যতায় দিন দিন পুকুরের অস্তিত্ব লোপ পেয়ে যাচ্ছে। যদিও সরকার বিভিন্ন জায়গায় পুকুর খনন করাচ্ছে বা টাকা দিচ্ছে, কিন্তু এখানেও অনেক দুর্নীতি পরিলক্ষিত হয়। মানুষ কিছু টাকার জন্য নিজের ভবিষ্যৎ জীবন ধ্বংস করতেও পিছপা হচ্ছে না। পঞ্চায়েতগুলি যদি মহাত্মা গান্ধী কর্ম নিশ্চিতকরণ যোজনার মাধ্যমে খনন করে তাহলে ভবিষ্যৎ জল সুরক্ষার ক্ষেত্রে একটি গুরুত্বপূর্ণ পদক্ষেপ হবে।

তাছাড়া আমরা আমাদের নিজেদের নবনির্মিত বাড়িতে, উপনগরীতে, সরকারী ভবনেও বৃষ্টির জল জমানো এবং সংরক্ষণের ব্যবস্থা করতে পারি। আমরা যদি আমাদের বাড়ির ছাদে, উঠানের পাশে, বাগানে চৌবাচ্চা বানিয়ে এই জল ধরে রাখি তবে হয়তো



অনেক কাজ হবে। বিদ্যুৎ খরচ বাঁচবে এবং সামগ্রিক অর্থনীতিতে এর একটা ইতিবাচক প্রভাব পড়বে।

জল সংরক্ষণতা যেরকম দরকার তেমনি জলের সদ্যবহার হওয়া খুবই প্রয়োজনীয়, পৃথিবীতে বিশুদ্ধ জলের খুবই অভাব বলতে গেলে নেই। আমরা প্রতিদিন ২ মিলিয়ন টন শিল্প এবং কৃষির আবজনা পৃথিবীর জলে মেশাচ্ছি। যথার্থ সৌচকার্য না হওয়ার জল দূষিত হওয়ার একটি প্রধান কারণ।

পৃথিবীতে আড়াইশো কোটি মানুষ ঠিক ঠিক শৌচব্যবস্থা ছাড়াই আছে। পৃথিবীতে জল বাহিত রোগের জন্য বৎসরে যত মৃত্যু হয় তা হিংসায় মৃত্যু থেকে বেশি। অসুরক্ষিত জল প্রতি বৎসর ৪০০ কোটির মত ডাইরিয়া রোগের সৃষ্টি করে এবং যা থেকে ২২ লক্ষের মত মানুষ মারা যায়।

তাহলে দেখা যাচ্ছে জলের সঠিক ব্যবহার হওয়া দরকার এবং জলকে বিশুদ্ধ রাখা প্রয়োজনীয়। জলকে বিশুদ্ধ রাখতে কিছু ব্যবস্থা নেওয়া দরকার যার মধ্যে আছে, শিল্প কারখানা থেকে নির্গত জল নদীতে না ফেলা, পৌরসভার আবজনা খালি জায়গায় না ফেলা, সঠিক জলসেচ পদ্ধতি ব্যবহার করা, ইত্যাদি।

মানুষ উন্নয়ন চাইবে এটাই স্বাভাবিক এবং উন্নয়নের চাকাকে উল্টোদিকে ঘুরানো বোধহয় অসম্ভব, তাই মানুষকে উন্নয়নের সঙ্গে সঙ্গে ভবিষ্যৎ প্রজন্মের কথাও মাথায় রাখতে হবে। মানুষ বিভিন্ন সময় বিভিন্ন সংকট সাহসের সাথে মোকাবিলা করেছে এবং বর্তমান সভ্যতায় পৌঁছেছে। বর্তমান বিশ্বের জলসংকট থেকেও সে বের হয়ে পৃথিবীকে বিশুদ্ধ জলের যোগান দিতে পারবে। শুধু সেটার জন্য চাই সঠিক তথ্য, উপযুক্ত প্রকল্প, দুর্নীতিমুক্ত প্রশাসক এবং উপযুক্ত নেতৃত্ব। এই অভিযানে আমাদের সবাইকে সামিল হতে হবে।■

**NABIN CHANDRA COLLEGE is a Partner Institute  
with Indira Gandhi National Open University (IGNOU)  
New Delhi under Convergence Scheme.**

**Several Courses are on offer here.**

**Students of College and also other from outside can  
apply for admission to a course of their choice in time.**

**Contact No. : 03845-268153**

## প্রতিকার

সুস্মিতা নাথ

সহকারী অধ্যাপিকা, বাংলা বিভাগ

মানুষ সমাজবদ্ধ প্রাণী। বুদ্ধি ও মননের শক্তিতে মানুষ অন্যান্য প্রাণীদেরকে অতিক্রম করে পশুর সংকীর্ণস্থবির জীবনযাপনের অভিসম্পাত থেকে মুক্তি পেয়ে, সুন্দর সুস্থ পরিবেশে জীবনযাপন করতে শুরু করেছে। কিন্তু বর্তমান যন্ত্রসভ্যতার দ্রুত উন্নতির যুগে মানবজাতির জৈবিক সুখ স্বাচ্ছন্দ্য অধিক ভাবে আত্মপ্রকাশ করার ফলে যন্ত্র রাক্ষসীর বিষ নিঃশ্বাসে মানবজীবন সংকটাপন্ন হয়ে দাঁড়িয়েছে। মানবজীবনের প্রতিটি ক্ষেত্রে ব্যবহার সমগ্র পৃথিবীর বায়ুমণ্ডল ও পরিবেশকে দূষিত করে তুলেছে। ফলে পরিবেশ সম্পর্কে মানবজাতিকে সচেতন করে তোলার জন্য সমগ্র বিশ্বে ৫ জুন বিশ্ব পরিবেশ দিবস পালিত হয়। ১৯৭২ সালে ৫ জুন স্টকহোমে শুরু হয়েছিল রাষ্ট্রপুঞ্জের মানব পরিবেশ বিষয়ক মহাসম্মেলন। পরিবেশ সংক্রান্ত স্টকহোমের এই সম্মেলনকে প্রথম বৃহৎ আন্তর্জাতিক সম্মেলন হিসেবে চিহ্নিত করা যায়। এই সম্মেলনে ১১৩টি দেশের রাষ্ট্রপ্রধানেরা প্রতিনিধি হিসেবে সেখানে অংশগ্রহণ করেছিলেন। রাষ্ট্রপুঞ্জের সাধারণ সভা ৫ জুনকে বিশ্বপরিবেশ দিবস হিসেবে চিহ্নিত করে। তারপর সমস্ত সদস্য দেশের সরকার এবং পরিবেশ সংক্রান্ত কাজকর্মের সংগে যুক্ত বিভিন্ন সংগঠনের কাছে এই দিনটি উদ্‌যাপনের আহ্বান জানায়।

পৃথিবীর বিভিন্ন অঞ্চলের পরিবেশ ভিন্ন-ভিন্ন। কারণ, কোনো-কোনো অঞ্চলে উত্তাপ বেশি আবার কখনও দেখা যায় বৃষ্টির পরিমাণ খুব কম হয়। আবার উত্তাপ যেমন বেশি হয় তেমনি বৃষ্টির পরিমাণ বেশি হয়। এর ফলস্বরূপ পৃথিবীর বিভিন্ন অঞ্চলে ভিন্ন পরিবেশের জন্য মানুষের জীবনধারণ প্রণালীতেও বৈসাদৃশ্য দেখা যায়।

বর্তমানে মানবসভ্যতা এমনভাবে যন্ত্রের জালে আবদ্ধ হয়ে পড়েছে এর ফলস্বরূপ আমাদের পরিবেশ বিভিন্ন ভাবে দূষিত হয়ে চলেছে। শহরের রাস্তায় প্রতিনিয়ত যন্ত্রচালিত যানবাহন থেকে নিঃসৃত পোড়া গ্যাস আমাদের বায়ুমণ্ডলকে দূষিত করে তুলছে। এছাড়া বিভিন্ন শিল্প-কারখানা থেকে বেরোনো ধোঁয়া আমাদের পরিবেশের সংগে-সংগে আমাদের শারীরিক অসুস্থতার কারণও হয়ে উঠেছে। কলকারখানা থেকে পরিত্যক্ত জঞ্জাল নদীর জলে মিশে জলের বিশুদ্ধতা নষ্ট করে দিচ্ছে। নদী আমাদের জল সরবরাহের প্রধান প্রাণকেন্দ্র, সেখান থেকেই আগত জল আমরা কৃষিকার্যে ব্যবহার করি। তাছাড়া আমরা পানও করি, এর ফলস্বরূপ কৃষিক্ষেত্রের জমির যেভাবে উর্বরা শক্তি হ্রাস পাচ্ছে তেমনি মানবজীবন ব্রংকাইটিস, প্লুরিসি, শ্বাসকষ্ট ইত্যাদি রোগের সম্মুখীন হতে শুরু করেছে। আমরা যদি তিন জেলায় বিভক্ত বরাক উপত্যকার দিকে দৃকপাত করি তবে সেখানেও পরিবেশ দূষণের ছবি পরিলক্ষিত হয়। শহরের রাস্তাঘাটের পাশে অপ্রয়োজনীয় বস্তুগুলি ফেলে দেওয়া হচ্ছে। তাছাড়া শহরের মধ্যে নালাতে নোংরা জমে চারিদিক দুর্গন্ধযুক্ত হয়ে প্রত্যেকেরই অসুবিধার বা অসুস্থতার কারণ হয়ে উঠেছে।

পরমেশ্বর আমাদেরকে এই অগ্নান সুন্দর পৃথিবীতে প্রেরণ করেছেন। কিন্তু দুঃখের বিষয় আমরা কোনো না কোনোভাবে পৃথিবীকে দূষিত করে যাচ্ছি। আমরা যদি এই মূহূর্ত থেকে পরিবেশ দূষণের প্রতিকারে প্রয়াসী না হই তবে অনাগত উত্তর পুরুষদের জীবনও আমরা সংকটের অভিমুখী করে তুলব।■

**“কথা বলার আগে শ্রাব নোব, লিখার আগে ভাব নোব, খরচ করার আগে আয় করাব,  
সমালোচনা করার আগে আপক্ষা করাব, প্রার্থনা করার আগে সকলকে ক্ষমা করাব, মৃত্যুর আগে  
সমাজকে যা পারাব দিয় যাব।”**

**(উইলিয়াম আর্থার)**

**“ইচ্ছার শেষ চরিতার্থতা প্রায়। প্রেম-কব, কী হাব, এ-সমস্ত প্রশ্ন থাকতেই পার না। প্রেমআপনিই  
আপনার জবাবদিহি আপনিই আপনার লক্ষ্য।”**

**(প্রেম / শান্তিনিকেতন ৪ রবীন্দ্রনাথ)**

## দূরদর্শনে

কান্তি দে লস্কর  
স্নাতক ৩য় বর্ষ (কলা)

দূরদর্শনে গানটা গাওয়ার  
সুযোগ যদি চান,  
বাতলে দেবো উপায়খানা  
একটু শুনে যান।  
বিজ্ঞাপনের টাকায় এখন  
চলছে অনুষ্ঠান,  
গানটি ছাড়া সবার মাঝেই  
বিজ্ঞাপনের বাণ।  
রবীন্দ্র আর নজরুলেতে  
নেই যে কারো টান,  
কী যে লেখা গানের কথায়  
দেয় না যে কেউ কান।  
বিজ্ঞাপনের কথা ভরে  
লিখুন নিজেই গান,  
স্বর চড়িয়ে দিন ভরিয়ে  
জুড়াক সবার প্রাণ।  
বিজ্ঞাপনের মালিক যদি  
গানের খবর পান,  
সসম্মানেই ঘটবে সুযোগ  
সঙ্গে অল্পদান ॥■



## কাক কোকিল

রূপা সেন  
স্নাতক প্রথম বর্ষ (কলা)

কাককোকিলের রঙ যদি বা এক —  
তবু ওদের ভেদ অনেক।  
ভোরের আলোয় কাক ওঠে ডেকে,  
ঋতুবসন্তে কোকিল ডাকে।  
কাকের ডাকে কানে তালা,  
কোকিলের কুহু করে ভুবন ভোলা।  
নোংরা-পচা খেয়ে কাক —  
পরিবেশকে রাখে সাফ।  
কাকের বাসায় কোকিল এসে,  
ডিম পেড়ে যায় মনের সুখে।  
কাককে বলে ধূর্ত পাখি  
কিন্তু কোকিল দেয় যে ফাঁকি।  
কোকিল হলো বসন্ত সখা,  
কাক কি তবে শুধুই বোকা?■



## শাওনের শেষে

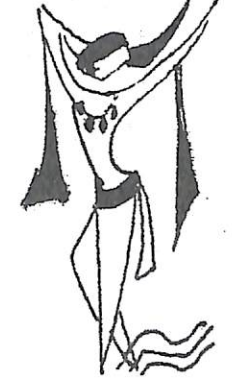
প্রণয় রায়  
উচ্চতর মাধ্যমিক (কলা)

আজি শাওনে মল্লারের গানে,  
ঝুলন ঝুলিছে নীরদ গগনে।  
দিবা রাত্রি যায় কেটে, বৃষ্টি শুনে শুনে,  
রোদ্দুর ছটা দেখিনা আশমানে।  
শশাঙ্ক লুকোচ্ছে বারিধের পিছনে,  
আকাশের ঐ বিজলির কারণে।  
বসুন্ধরার অভিষেক চলছে সাড়স্বরে,  
শরতে শারদার আগমনীর জন্যে।■

## নকল

হাছিনা সুলতানা চৌধুরী  
উচ্চতর মাধ্যমিক দ্বিতীয় বর্ষ (কলা)

যদি পরীক্ষা দিতে নকল কর  
একদিন পাবে তার ফল।  
কাঁদবে শুধু একা বসে  
আসবে শুধু চোখের জল।  
শিক্ষকের চোখে ধূলা দিয়ে  
নকলের সাহায্যে পাস করেছ এখন,  
চাকরির জন্য ইন্টারভিউ দেবে  
পাসে থাকবে কে তখন?  
আসবে শুধু দীর্ঘশ্বাস  
জীবন হবে সর্বনাশ।  
নকলে জীবন নষ্ট করে —  
শুভ জীবনকে আধার করে,  
কর্ম দোষে জীবন নষ্ট  
ভবিষ্যতে থাকে কষ্ট।  
নকলের শিক্ষা ও জীবন  
ধূলায় লুটে  
নকল ছাড়া শিক্ষা ও জীবন  
স্বর্গে ফুটে।  
নকলকে তুমি কর ভয়  
নকল ছাড়া জীবন জয়।  
চেষ্টার মধ্যে জীবন সফল  
চেষ্টা করলে তা হয় না বিফল।  
এই কথা মনে করে  
নকলকে তুমি রাখ দূরে।  
নিশ্চয় তুমি পাস করবে  
সবাই তখন হবে হর্ষ  
ধন্য তোমায় সবাই দেবে  
ধন্য দেবে ভারতবর্ষ।■



## ধন্য আমার গুরুজন

শহিদুল ইসলাম  
স্নাতক দ্বিতীয় বর্ষ (বাণিজ্য)

ধন্য আমার গুরুজন  
ছাত্র জীবনের গুরুজন আমার প্রভু  
মা-বাবা জন্ম দিয়েছেন তবু  
শিক্ষক ও শিক্ষিকা আমার প্রভু।  
জননী জন্ম দিয়েছেন শিশু  
শিক্ষা দিয়েছেন গুরুজন শুধু  
স্কুল-কলেজে এসে আমরা শিখেছি শিক্ষা  
শিখেছি সং-আচার।  
গুরুজনের কথা স্বর্গের খাতা  
মা-বাবার আমি জন্ম গাথা ॥  
গুরুজন আমার শিক্ষা দাতা  
গুরুজনের কথায় স্নেহ মমতা  
গুরুজনের কথা আঁধার রাস্তার আলো  
আমার গুরুজনের চরণ বন্দনায়  
আমি প্রণাম জানাই।  
ধন্য আমার গুরুজন  
যতক্ষণ আমার না হবে মরণ  
ততক্ষণ রাখব আমি আপনাদের স্মরণ।  
আমার শিক্ষার প্রিয় গুরুজন  
প্রণাম জানাই সর্বক্ষণ।  
গ্রহণ করুন আপনারা আমার প্রণাম  
দিয়েছি আমি সহস্র ছালাম  
আপনাদের দ্বারা আমার জীবন  
হয়েছে আজ পূরণ  
ধন্য আমার গুরুজন।  
গুরুজন আপনারা হলেন আমার প্রভু  
ভুলব না আমি গুরুজন কখনও  
ধন্য আমার গুরুজন।■



## নতুন দিনের গানে

রসিদা হক  
স্নাতক তৃতীয় বর্ষ (কলা)

বিকালটা শেষ হয় রোদের পড়ন্ত বেলায় ;  
কুয়াশা লেপে দেয় সন্ধ্যা চাদর।  
আবীর রাঙা আকাশে ডুব দেয় অন্ধকারে।  
ঘুম ঢোলা চোখে চলে —  
পড়া পড়া খেলা।  
ঘুম পাড়ানি গান,  
দীপ জ্বালা হাতের পরশ  
স্বপ্নের আবেশ আনে বুকে।  
হিমের টুপটাপ শব্দ,  
ঘুম পরীরা, স্বগতি তারারা,  
কিশলয়ের বুকে উঁকি মারে।  
নিশুতি রাত ভাঙে পৃথিবীর কোলে।  
নিশাচর জাল পাতে,  
লোলুপ শৃগাল ডাকে ;  
কালপেঁচা ভেঙে দেয়—  
দেবশিশুর স্বপ্নিল ঘুম।  
স্বপ্নকোরক দেবদূত,  
নিজেকে লুকিয়ে রাখে মাতৃ বুকে।  
রাত হেঁটে ক্রমে ছুঁয়ে যায় ভোরের চিবুক ;  
মাতৃ ক্রোড় থেকে জেগে ওঠে অভয় মস্ত্র ;  
নতুন দিনের গানে।■



## প্রথম চাওয়া

স্মিতা দাস

উচ্চতর মাধ্যমিক প্রথম বর্ষ (কলা)

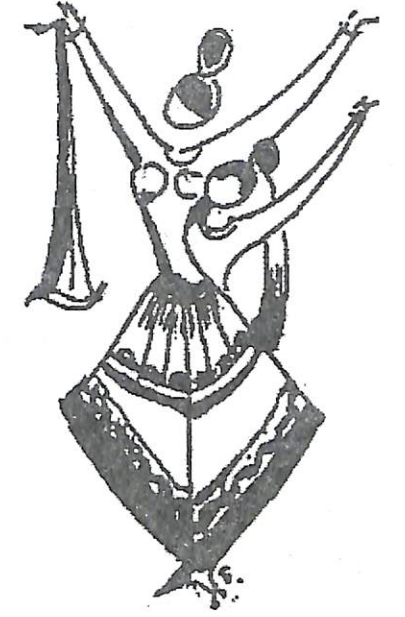
প্রথম যখন চেয়েছি কিছু,  
মিলেনি তখন কোনো কিছু।  
মনে হয় পৃথিবীতে আছে যত দুঃখ-কষ্ট  
সবই আমার কাছে স্পষ্ট।  
যতই পাইনা কেন সাজেশন,  
তাতেও হয় না সলিউশন।  
গান আছে সুর নেই,  
জীবনে আমার কিছুই নেই।  
গোপন মনে যত আশা,  
তার নেই কোনো ভাষা।  
কিসের জন্য জানিনা প্রাণে,  
ব্যাকুল হয়ে ঘুরি বনে বনে।  
ভাগ্যে যদি থাকে কিছু পাওয়া,  
সেটাই আমার প্রথম চাওয়া।■



## নারী

বারনা রানি দাস  
উচ্চতর মাধ্যমিক প্রথম বর্ষ (কলা)

নারী মানব জীবনে  
শক্তিময়ী প্রাণকেন্দ্র,  
নারী যেখানে উর্ধ্বমুখী  
সমাজ সেখানে উন্নত।  
নারী যেখানে নিম্নগামী  
সমাজ সেখানে পতিত,  
যেখানে নারী নেই —  
সেখানে বিস্তার নেই —  
আনন্দ নেই, উৎসব নেই,  
নারী তুমি চঞ্চল  
তুমি অনন্যা, তুমি শক্তি।  
নারী প্রকৃতির সৌন্দর্যের প্রতিমা,  
নারীর রূপছটা যেন —  
উষাগমের পূর্বাভাস,  
সর্বমানবকে কাছে টেনে আনার —  
আকর্ষণী শক্তিরূপ।  
নারী পূর্ণতার তৃপ্তি, শ্লিষ্ক-শান্ত,  
সমাহিত প্রজ্ঞার জন্মভূমি,  
নারী জগৎ কল্যাণকারিণী।■



## প্রদূষণ

অনামিকা পাল

উচ্চতর মাধ্যমিক প্রথম বর্ষ (কলা)

গাছপালা কাটার সংখ্যা যত বাড়ছে,  
বায়ু প্রদূষণের মাত্রা ততই বাড়ছে।  
কল-কারখানা দিনদিন সুলভ হচ্ছে,  
জল প্রদূষণের রোধের পথ ততই দুর্লভ হচ্ছে  
প্লাস্টিকের ব্যবহার দিন দিন বাড়ছে,  
মাটি প্রদূষণের মান ততই ঘাটছে।  
উড়ো জাহাজ, গাড়ির সংখ্যা যত বাড়ছে,  
শব্দ প্রদূষণের মাত্রাও ততই বাড়ছে।  
বায়ু প্রদূষণের মান কমানোর চেষ্টা করুন,  
নিজের সমাজ সুন্দর ভাবে গড়ে তুলুন।  
জল প্রদূষণ রোধ করুন,  
মাটি প্রদূষণ রোধ করুন,  
সবাইকে সুস্বাদু খাদ্য বিতরণ করুন।  
শব্দ প্রদূষণ রোধ করুন,  
তবেই ঈশ্বর সবার মঙ্গল করবেন।■



## দুর্গাপূজা

সুরভি চক্রবর্তী  
উচ্চতর মাধ্যমিক প্রথম বর্ষ (কলা)

বাঙালির জীবনে পূজা আছে কত সব  
তারই মধ্যে শ্রেষ্ঠ হল শরতের দুর্গোৎসব ॥  
কৈলাস থেকে মর্ত্যে আসেন  
গিরিকন্যা পার্বতী ।  
সঙ্গে থাকেন কার্তিক, গণেশ  
লক্ষ্মী ও সরস্বতী ॥  
মহালয়াতে মা দুর্গা শুরু করেন যাত্রা  
সবার মনে যোগ হয় খুশির নতুন মাত্রা ॥  
মহাষষ্ঠীর শুভসন্ধ্যায় মা আসেন ঘরে  
ভক্তিভরে মা দুর্গাকে বরণ সবাই করে ॥  
সপ্তমীর সকালে সবাই নতুন কাপড় পরে  
মণ্ডপে গিয়ে দশভূজার উপাসনা করে ॥  
অষ্টমীতেও মা দুর্গার পূজা হয় প্রথানুসারে  
মহামায়ার আরাধনায় মানুষ ত্রুটি নাহি করে ॥  
নবমীতে মা দুর্গার চরণে সকলে দেয় অঞ্জলি  
বেলপাতা ও দুর্বাসহ আমরা দেই পুষ্পাঞ্জলি ॥  
নবমীর পরদিন দশমী আসে যখন  
আনন্দে ও বিষাদে মাকে দেই বিসর্জন ॥  
স্নেহাশিষ ও প্রীতির সঙ্গে মুছে যায়  
দশমীর ছায়া  
সমাপ্তিতে সকলকে জানাই আমার  
আগাম শুভবিজয়া ॥■



## প্রিয়তমা

সুমিত দেব  
উচ্চতর মাধ্যমিক প্রথম বর্ষ (কলা)

যেদিন দেখেছি প্রথম তোমায়,  
মনে লেগেছে ভালো ।  
মনেহয় জীবনের চারিদিক যেন,  
জেগেছে নতুন আলো ।  
গোপন মনে কত আশা,  
নেই কোনো তার বাসা ।  
সেটা জানবে কেবল শুধু,  
তোমার আমার মনের ভাষা ।  
তুমি শুধু পাশে থেকো,  
এই আমি চাই ।  
তোমায় নিয়ে আমি,  
সুখের স্বপ্ন সাজাই ।  
তুমি সদা ভালো থেকো,  
এই আমার আশা ।  
তোমায় নিয়ে বাঁধব আমি,  
সুখের একটি বাসা ।■

## প্রথম দেখা

সুতপা ভট্টাচার্য  
উচ্চতর মাধ্যমিক দ্বিতীয় বর্ষ (কলা)

প্রথম তোমায় দেখেছি দিদির  
বিয়ের অনুষ্ঠানে,  
সেই থেকে তুমি আমার হয়ে  
রয়েছ এই প্রাণে ।  
পুতুল পুতুল মুখটা তোমার  
এখনও মনে হয়,  
তোমায় দেখলে সবার যেন  
দুঃখ দূর হয় ।  
একপলকের দেখায় তোমায়  
লাগল ভীষণ ভালো,  
তুমি যেন অন্ধকার ঘরে জ্বলে উঠা  
প্রদীপ শিকার আলো ।  
মাঝে মাঝে তোমার আমার  
হত যখন কথা  
খুঁজেই আমি পেতাম না বাক্য  
বলব কি আর কথা ।  
এইভাবে তিনটি বছর পেরিয়ে গেল  
আবার তোমার আমার দেখা হল ।  
সেই রামনগরে ।  
আস্তে আস্তে দুটি মনের বাধন পড়ল  
ভালোবাসার ডোরে ।  
ভুলবে না তুমি, ভুলাব না আমি —  
প্রথম সেই দেখা,  
স্রষ্টার কাছে প্রার্থনা আমার  
তোমায় আপন করে পাওয়া ।■



## কিছু মানুষ গরিব হয়

নমিতা দাস  
স্নাতক তৃতীয় বর্ষ (কলা)

কিছু মানুষ গরিব হয় —  
ভাগ্যের দোষে ।  
কিছু মানুষ গরিব হয় —  
নিজের স্বভাবে ।  
কিছু মানুষ গরিব হয় —  
জুয়ার নেশায় ।  
কিছু মানুষ গরিব হয় —  
চিকিৎসার দায় ।  
কিছু মানুষ গরিব হয় —  
প্রেমে দিয়ে ডুব ।  
কিছু মানুষ গরিব হয় —  
রাগ তার মূলে ।  
কিছু মানুষ গরিব হয় —  
অন্ধের ভূলে ।  
কিছু মানুষ গরিব হয় —  
অলস থাকায় ।■



## একাকী পথ চেয়ে বসে থাকা

সপ্তমী দাস

উচ্চতর মাধ্যমিক দ্বিতীয় বর্ষ (কলা)



## মায়ের কোলে লক্ষ্মীসোনা হয়ে থাকব

তনুকা দাশগুপ্ত

উচ্চমাধ্যমিক প্রথম বর্ষ (কলা)

আকাশের অজানা পাখি হয়ে উড়ব।  
আকাশের ওপারে কবিতা হয়ে থাকব।  
ভোরের আকাশে স্বপ্ন হয়ে থাকব।  
নীল আকাশে গল্প হয়ে থাকব।  
সন্ধ্যার আকাশে তারা হয়ে থাকব।  
পৃথিবীর বুকে ইতিহাস হয়ে থাকব।  
আকাশকে অবলম্বন করে জীবনে এগিয়ে চলব।  
মায়ের কোলে লক্ষ্মীসোনা হয়ে থাকব।■

দেখেছি স্বপ্ন করেছি আশা,  
তোমায় নিয়ে বাঁধব বাসা।  
তুমি আছো তাই আমি আছি,  
শুধু তোমার জন্য বেঁচে আছি।  
দেখেছি আকাশ করেছি প্রকাশ,  
মনের কথা তোমার কাছে।  
বুঝেও তুমি কেন আমাকে বুঝতে চাওনি?  
তোমার স্নেহ মমতা কেন আরও দাওনি?  
আরও ভালোবাসা তুমি দিয়ে দেখতে,  
জীবন উজাড় করে দিতাম মেতে মেতে।  
তোমার একটু অপেক্ষা দিত আরও প্রচণ্ড ভালোবাসা,  
তিলে তিলে খুশি দিয়ে বাঁধতাম সুখের বাসা।  
তোমার সব আপনজন হত আমার,  
আমার সব আপনজন হত তোমার।

কেন দুঃখ দিলে তোমার ভালোবাসার অভিনয় দিয়ে।  
আমি তো কখনও দুঃখ দিতে চাইনি তোমার ভালোবাসা নিয়ে।  
আজও পথ চেয়ে বসে থাকি তোমার আশায়।  
ডুবে থাকি সর্বদা তোমার কল্পনায়।  
এখন করবে কি আপন তুমি আমায়?  
অনেক অনেক খুশি হতাম যদি পেতাম তোমায়।■

## মনের ধারণা

পম্পী রায়

উচ্চতর মাধ্যমিক প্রথম বর্ষ (কলা)

আচ্ছা বলো তো এই পৃথিবীতে ভূত আছে কি? লোকে বলে এই পৃথিবীতে ভূত নেই, এসব মনের ধারণা, আবার বলে ভগবান নিশ্চয় আছেন। কিন্তু আমি বলি এই পৃথিবীতে খারাপ-ভালো থাকতে পারে, ভগবান থাকতে পারেন, তবে কি ভূতের এই পৃথিবীতে স্থান নেই, হ্যাঁ ভূতের স্থান আছে। আমি এ সবকিছুই বিশ্বাস করি। আবার দেখা যায় সব মানুষই চায় ভালো হয়ে চলতে কিন্তু আমি বলি, এ পৃথিবীতে কেউই চায় না খারাপের সাথে চলতে। তাই অনেকবারই আপনজন বলে থাকেন খারাপের সাথে চলাফেরা করলে তুমি খারাপ হয়ে যাবে। কিন্তু আমি তা বিশ্বাস করি না, কারণ মানুষ খারাপের সাথে চললেই কি খারাপ হয়ে যায়? কখনো দেখা যায় ভালো-ভালোর সাথে চলেও খারাপ হয়, আবার খারাপ ভালোর সাথে চলেও ভালো হয় এবং একজন মানুষের মধ্যে খারাপ ভালো থাকবেই।■

## বই না থাকলে কি হতো

আব্দুল হামিদ

স্নাতক দ্বিতীয় বর্ষ (কলা)

মানব সমাজে আমরা যাদের জনজাতি বলে অভিহিত করি তাদের মধ্যে প্রতিভার কোনো অভাব নেই। কিন্তু তবু যে তারা অন্যান্যদের চেয়ে অনগ্রসর তার প্রধান কারণ হল লিপির আবিষ্কার করে তাদের জ্ঞান ও অভিজ্ঞতাকে সংরক্ষিত রাখার কোনো ব্যবস্থা ছিলনা, এবং তারা কোনো লিখিত সাহিত্য সৃষ্টি করতে পারেনি। যাদের লিখিত সাহিত্য অর্থাৎ গ্রন্থ আছে; একমাত্র তাদেরই আমরা সভ্যজাতি বলে গণ্য করি। যাদের এ সম্পদ নেই তারা সভ্যতার সুদীর্ঘ যাত্রাপথে সহস্র যোজন পাশ্চাতে থেকে যায়। ফরাসী দার্শনিক ভলতেয়ার এক কথায় বলেছেন— “একমাত্র গ্রন্থই পৃথিবীর শাসন করে; পৃথিবীর যেসকল জাতির লিখিত সাহিত্য আছে অন্ততঃ তাদের গ্রন্থই শাসন করে। অন্যরা ধর্তব্যের মধ্যে পড়ে না।”

ইউরোপের ইতিহাসে যে যুগকে আমরা মধ্যযুগ বলে চিহ্নিত করি তার স্থিতিকাল হচ্ছে প্রায় ৫০০ খ্রীষ্টাব্দ থেকে ১৪৫০ খ্রীষ্টাব্দ পর্যন্ত। এই মধ্যযুগে বিভিন্ন যন্ত্র তন্ত্র শিক্ষা দীক্ষা প্রসারের ফলে নতুন এক পুণর্জ সৃষ্টি হল। এই পুণর্জ নাম Renaissance এর পর থেকে ইউরোপের সভ্যতা সংস্কৃতিতে যে নবযুগের সূচনা হল তাকে নবজাগরণের যুগ বলে চিহ্নিত করা হয়। আধুনিক যুগের শ্রেষ্ঠ সম্পদ যেমন—বিজ্ঞান প্রযুক্তিবিদ্যা; বৈজ্ঞানিক দৃষ্টিভঙ্গি গণতন্ত্র ও ধর্মনিরপেক্ষ তার আদর্শ সর্বজনীন শিক্ষাব্যবস্থা চিন্তা এবং প্রকাশের স্বাধীনতা ঐতিহাসিকতাবাদ ইত্যাদির জন্য আধুনিক জগৎ ইউরোপের নব জাগরণের কাছে বিশেষ ভাবে ঋণী।

কিন্তু গভীরভাবে চিন্তা করলে দেখা যায় যে আসলে মানুষ বইয়ের কাছেই ঋণী, কারণ গ্রীক ও রোমানদের চিন্তা চর্চা ও জ্ঞান গ্রন্থের মধ্যে লিপিবদ্ধ ও সংরক্ষিত আছে। তাই হাজার বছর পরেও মানুষ তা নতুন করে জানার সুযোগ পেল। বই না থাকলে এই জ্ঞানভাণ্ডার চিরদিনের জন্য হারিয়ে যেত। এতে মানুষের অবস্থা কি হত তা ব্যাখ্যা করার কি আর প্রয়োজন আছে?■

“আপ্তাবের আসল সত্তা উত্তাপ। সে তার মৌলিক সত্তায় সর্বত্র আছে কিন্তু থাকলেও সে দৃশ্যমান নয়। অকস্মাৎ বস্তুগুণ্যক আপ্তাব কার নিজাক প্রকাশ করে। তখন উত্তাপের সঙ্গে দীপ্তিতে উদ্ভাসিত হয়। প্রদীপে তেল আছে শিখা নেই সেই শিখাটি নিতে হয় অন্য একটি জ্বলন্ত প্রদীপের শিখা থেকে। নানাব মানুষের জীবনে নানাব প্রাণের উপকরণ থাকে কিন্তু উপকরণগুলির অবস্থা মাটি বা ধাতুর প্রদীপ, ঘি বা তেল বা ওই জাতীয় কিছু এবং সলাতের মত। সে প্রদীপ রূপে সার্থক হয় অন্য জ্বলন্ত প্রদীপের শিখা থেকে নিজকে জ্বালিয়ে নিয়ে। শতকরা নিরববুইটি ক্ষেত্রে কীর্তিমাবের প্রত্যক্ষ সংস্পর্শ বা কীর্তির সংস্পর্শে এসে নবীন জীবনের দীপাধার তেল সলাতের উপকরণ প্রদীপ হয়ে জ্বলে ওঠে জীবন প্রাণের উপকরণে আপ্তাবের ছোঁয়া লোগে ভিতরের আপ্তাব শিখায় আত্মপ্রকাশ করে।”

— (আমার জীবন কপালকুণ্ডলা। তারাকান্ত বন্দ্যোপাধ্যায়)

প্রেম নিজ গৃহে শুরু করতে হয়। তখনই আমি অন্যকে সেই প্রেম বিতরণ করতে পারব। প্রেমের গভীর বিশ্বাসই অন্যের প্রতি সেবার মনোভাব বৃদ্ধি করে।

(— মাদার টেরেজা)

খোঁজতে থাকা বস্তুটা না পাওয়াতেই ব্যর্থতা নয়, খোঁজতে থাকা বস্তুটা না পাওয়ার ফলে সংগ্রাম ছেড়ে দেওয়াটাই প্রকৃত ব্যর্থতা।

(— জজ ইলিয়ট)

## গোড়ায় গলদ

ত্রিদিপ ভট্টাচার্য  
স্নাতক প্রথম বর্ষ (কলা)

একটি নবজাত শিশুর জন্মের পর শিশুটিকে নিয়ে পরিবারের কতই আমোদ। মা বাবা ও আত্মীয় স্বজন সকলেই আহ্লাদে আটখানা হন। ক্রমে সবার মনে আশা জাগে শিশুটি বড় হয়ে ডাক্তার, ইঞ্জিনিয়ার হবে, পরিবার ও বংশের নাম উজ্জ্বল করবে। একটি নবজাত শিশু বড় হয়ে ভবিষ্যৎ কল্যাণের জন্য কাজ করবে এবং নিজের সম্মানের সাথে দেশের সম্মান বৃদ্ধি করবে। এই তো আমাদের আশা। কিন্তু বাস্তবে আমরা কি তা পাই? পেয়ে থাকলে তা কতখানি? বাস্তবে তা বহুলাংশে অসফল। তার কারণই হচ্ছে আমাদের শিক্ষা। একটি নবজাত শিশুর জন্য প্রধান শিক্ষাই হচ্ছে ঘরের শিক্ষা। ঘরে মা-বাবা ও আত্মীয় স্বজনের লালন-পালনের মধ্য দিয়েই শিশুর শিক্ষার প্রসার ঘটে এবং শিশুটিও বড় হয়ে উঠে। এই ঘরের শিক্ষাই প্রথম শিক্ষা। দ্বিতীয়ত আমরা পাই বিদ্যালয়ের শিক্ষা। কিন্তু ভারতবর্ষের একটি শিশু বড় হয়ে তার দায়িত্বভার সম্পূর্ণরূপে মানিয়ে কাজ না করার জন্য আমাদের এই উভয় শিক্ষাই দায়ী।

এই উভয় শিক্ষার মধ্যে দু'একটি উদাহরণ তুলে ধরছি। মা সন্তানের যথার্থ মঙ্গলাকারিণী তাতে সন্দেহ নেই; কিন্তু আসলে নিজের অজান্তে তিনিও সন্তানটিকে পঙ্গু করার পক্ষেই কাজ করেন।

মা যখন শিশুকে খাওয়াতে যান তখন শিশু না খাওয়ার বায়না ধরে। আর মা শিশুকে শুধুই প্রলোভন দিতে থাকেন। যেমন- আমার সোনা মনা খেয়ে নাও, তারপর তোমাকে আমি বড় একটা চাঁদ পেড়ে দেব। বাবা এলে চকলেট আনবে, বড় একটি খেলনা আনবে ইত্যাদি। এইগুলি শুনে শিশুর মনে পাওয়ার আশা জাগে। যদিও কথটি অতি সামান্য কিন্তু পরিস্কার ভাষায় শিশুকে একপ্রকার ঘুষ দিয়েই কাজ করানো হচ্ছে। ক্রমে বড় হয়ে তা বাস্তবে পরিণত হয়। বাবা ছেলেকে নিয়ে পড়তে বসলেন এবং ছেলেকে বলেন, যা টেবিল থেকে সিগারেট ও দিয়াশলাই নিয়ে আয়। বাবা ছেলের পড়ার টেবিলে বসে ধূমপান করেন। ছেলে দেখে ও ধোয়ার গন্ধে তার অভ্যাস হয়ে যায়। বাবার অনুপস্থিতিতে পেন্সিল দিয়ে সিগারেট খাওয়ার ট্রেনিং দেয়। তাই ছেলের সিগারেট খাওয়ার জন্য একরকম বাবাই দায়ী। স্কুলে যখন শিশু যাওয়া শুরু করে তখন চুরি কি জিনিস তা সে জানে না। একদিন একটি ছাত্রের পেন্সিলটি ভালো লাগে আর সে পেন্সিলটি ব্যাগে ভরে নিয়ে আসে। ছাত্রটি বাড়ি এসে খোকার বাবাকে বলে — কাকু খোকা স্কুল থেকে আমার পেন্সিল নিয়ে এসেছে। পিতা ছেলেকে ডেকে পেন্সিলটি ফিরিয়ে দিতে বললে, খোকা ছাত্রটিকে পেন্সিলটি দিয়ে দেয় এবং ছাত্রটি চলে যায়। তারপর পিতা বেত নিয়ে খোকারে প্রহার করে বলতে থাকেন, গতকাল তোকে অফিস থেকে এক বাক্স পেন্সিল এনে দিয়েছি তাতে তোর হয়নি, তাই স্কুল থেকে পেন্সিল চুরি করতে গেলি। শিশুটির মনে জাগে স্কুল থেকে আনলে চুরি আর অফিস থেকে আনলে সেটা চুরি হয় না।

গৃহের এইসব খুটি-নাটি জিনিস সাধারণভাবে দেখলেও এত সাধারণ নয়। এইসব তুচ্ছ জিনিসের জন্যই আমাদের সমাজের লোকের চরিত্র কলুষিত হতে চলেছে। মানব চরিত্রের অধঃপতনের জন্য গৃহ শিক্ষাই একাংশ দায়ী। মাতা-পিতা ও পরিবার পরিজনের খামখেয়ালীর জন্য একটি নবজাত শিশুর নৈতিক চরিত্র পতনের স্বীকার হচ্ছে।

নবজাত শিশুটি কিছু বড় হবার পর, যখন বই পড়ে ও স্কুলে যেতে শুরু করে তখন থেকেই মোটামোটি পুঁথি শিক্ষার প্রথমাবস্থায় আমরা দেখতে পাই যে বইতে লিখা আছে ‘সদা সত্য কথা বলিবে’। ‘কখনো চুরি করবে না’। ঠিক এই কথাটি যখন শিক্ষক স্কুলে ছাত্রকে পড়ান তখন তিনিও ঠিক সেইভাবে বলেন ‘সদা সত্য কথা বলিবে’, ‘চুরি করবে না’। আর ছাত্র ছাত্রীরা ঠিক একই ভাবে পুনরায় শিক্ষকের সঙ্গে বলতে থাকে। শেষ পর্যন্ত এই দাঁড়ায় যে, শিক্ষক ছাত্র ছাত্রীকে বলছেন এবং ছাত্র ছাত্রীরা শিক্ষককে বলছে। তাই কারও মনের মধ্যে কোনো প্রকার প্রতিক্রিয়া হয় না। ‘সত্য কথা বলব’, ‘চুরি করব না’ এই কথা বলা হয় না। এইভাবে স্কুলের শিক্ষাতেও অনেক অনেক গলদ আছে যা একটি শিশুর পক্ষে ক্ষতিকারক।■

## ACHIEVEMENT

LIMCA RECORD AND THE INTERNATIONAL  
ACHIEVEMENTS OF DR. PAULOSE V.D.

Dr. Paulose V.D. an Associate Professor in the Dept. of English in Nabin Chandra College at Badarpur in Assam has achieved a stupendous feat and created a record when he wrote **the first monosyllabic poem of six hundred lines**. In recognition of this achievement, **this record is entered in the Limca Book of Records-2010**. (page 104, English edition). This 600 line long poem entitled ‘Thoughts on the Site of my Old Home’ is written in iambic tetrameter (the meter used in the poem) and **consists of 4866 monosyllabic words without ever using a single disyllabic or multi-syllabic word even in the title of the poem**. This must be a record not only in English but also in any language of the world. This poem is an extended version of his earlier 72 line long poem, ‘A Tribute to my Father’ written as an elegy in memory of his father who died in 1989 and got published thereafter. Limca Book of Records writes, “The poem was inspired by the poet’s visit to the site of his old home, making him nostalgic and reminiscent of the days gone by”

This poem has created a double record In that this is the only such a long poem in which the number of words has exceeded the number of syllables in it. The poem has 4866 words while the number of syllables is 4800(600lines and 8 syllables per line) only Dr. Paulose’s poems are published in 13 countries, (Argentina, Australia, Austria, Canada, China, England, France, Greece, India, Italy, Japan, Nepal and the, U.S.A.), translated into 7 international languages such as Chinese, French, German, Greek, Italian, Japanese and Spanish, and one Indian language (Bengali), have won two best poem awards (Diploma di Merito) from Italy for his poems ‘Ode to a Hyacinth’ and ‘Beggars: White and Black’. He edited an annual poetry journal, *Millennium Peace* from 2000 to 2006 (seven numbers) to which poets from about thirty countries contributed their poems. ‘Home Thoughts’, a collection of Paulose’s 43 poems, was published in 2003 the copies of which are available with him.

Dr. Paulose’s name had been in news in several newspapers in the country when both Oxford and Cambridge Universities accepted his several corrections with regard to pronunciation in their Dictionaries. While ‘Aajkal’, a Bengali newspaper published from Kolkata, wrote an entire editorial on him under the caption ‘Abhinandan Paulose’, *Dainik Jugasanka* (on more than one occasion) and Times of India gave front page coverage to this news. Paulose is perhaps the only teacher in Assam to have received appreciation from both Oxford and Cambridge Universities for correcting their dictionaries. He found the right niche for himself when **Oxford University entered his name in the 6<sup>th</sup> edition of the Shorter Oxford English Dictionary**, which is a rare distinction for any Indian, for his invaluable contribution towards the various dictionaries of OUP.

Other international recognitions are **Distinguished Leadership Award** from the U.S.A., inclusion of name in some of the international biographies, membership to the **World Academy of Arts and Culture** etc., all for his contribution to poetry.

Though born and brought up in Kerala, he has spent 37 years in the North-East, of which thirty years has been spent in the teaching profession. In his completed U.G.C. Major Research Project entitled ‘**A Spectrographic Study of Bengali English**’ Paulose has scientifically analyzed the problems of the Bengali people in speaking English and suggested several measures to improve it.



## OUR ENGLISH' IN A UG ENGLISH LITERATURE COURSE

Rajat Bhattacharya  
Associate Prof. HOD of English

### OUR ENGLISH

By 'our English' I mean a total of all the components of English both linguistic and literary that are at present helpful to the growth of English in India. This concept of English is necessary because of the fact that many distinct varieties of English are evolving across the world along with the many varieties of English literature that necessarily accompany them. Indian English together with Indian English writing once looked down upon as a sub-variety of native British English is now winning respectability and a status of its own. The change in outlook is suggested in the change of name from *Indo-Anglican Writing* or *Indian Writing in English* to *Indian English Literature* which is being used in our discourses today. As teachers of both the English language and English literature, we are also propagators and champions of English at this formative period of English in our country. Let us therefore try to understand what role we can play in our collective effort for developing English in our own soil and helping it bear plenteous fruit. By doing so, I believe, we shall accomplish for ourselves a kind of nation-building with significance for all of us.

### TASK

The novelty of this task might surprise us. It can also annoy us if it means a total rejection of British literary texts from our English literature courses. But nothing of this misadventure is intended, and so we should have no reason to fear a sudden breaking of all ground beneath our feet. Some ground might eventually break, but given a certain sincere involvement and seriousness of approach, we shall certainly succeed in bringing about a change. What I mean to say is that the time has come for the teachers of English here to think realistically of the use of the English courses we give our students at intermediate and undergraduate level. The time has come to lighten the weight of British English literature, and make room as much as possible for Indian English literary texts as well as different other corresponding material to restructure our courses. We cannot understand the gravity of the cause unless we are aware of the general state of the English language and English literature in our country at present.

### CENTRALITY OF ENGLISH

I need not describe the innumerable private and public spheres of the use of English in our country. I need not describe the range and depth of this use. I also need not explain how in absence of English we shall now be incapacitated as individuals and as a nation. Even the most devout nationalist or the person with utmost communal and ethnic loyalty today is likely to speak in favour of English learning from primary to the highest level of education. This wide support for English backed by its many practical needs has given English a status next to our mother tongue and put upon us a responsibility to cultivate it lovingly to meet our many important goals.

### GROWING STAGE OF OUR ENGLISH

By looking at the copious British English texts in our courses that we teach, let us not think that our English language has equally grown and our English literature equally grown. At the moment we seem to be getting only our name right: Indian English Literature. We are now past the christening as it were, and we are to grow a good deal more before we attain maturity and esteem from others. To put it simply, our English language and English literature are relatively young and still under a significant influence of their parent language and parent literature; these are yet to reach a stage where they achieve a total identity of their own. Our creative maturity in English seems to be the next phase of their development for which this nation is keenly waiting. True, there is a tradition of English literature in our country since the time we came into contact with the British. But that tradition has not seemingly been traced very consistently

Keen 63

always, and also perhaps it has not continued in the way one might have liked. One reason could be the uneven growth of the English language due to our rather hesitant approach to it in the beginning that did not allow English to send roots deep into our cultural consciousness. We cannot say that the indigenisation of English has been achieved in India now. But our intimacy with the language has by and large deepened at all levels of our individual and collective life. Compared to creative output in English in the past, creative output in English today is immense. Even then we are yet to see the emergence of a distinctly self-confident Indian English literature that thrives by drawing sustenance from the literary traditions of the Indian languages and in turn enrich them. Nevertheless, our creative endeavours are on. In the end, Indian English literature might achieve its self-confident identity and might be comparable other English literatures in the world. Now by adopting a right kind of English syllabus we can help to shape that possibility.

### TRADITION AND STUDY OF ENGLISH LITERATURE

When we study a course of literature in a native Indian language, we have a native literary tradition to base our interpretation of texts in that language. With regard to our study of British literary texts, the literary tradition to interpret the texts has been the British literary tradition. The end of British rule in India in a way symbolized the end of the systematic study of their literature in India. But the native speakers of English left behind them the seeds of their language. These seeds did not perish but lived on and developed in a congenial, though non-native, climate.

The result of this gestation is what we see before us: a new English, which we call Indian English, is born, much like a newborn human baby. A growing baby slowly learns its language from the encircling environment. Similarly the newborn Indian English is gaining its own literature from the land of its birth that is India. This is the most natural relationship we can think of between English and its literature in India. We cannot deny this relationship without at the same time weakening both. A language cannot develop without its literature. If therefore despite emergence of our English and our English literature we continue to study mostly British or other English literatures, undervaluing our own English literature, we shall prevent not only the growth of our English, but also a sustained growth of tradition of literature in it.

### OUTLINE OF AN ENGLISH LITERATURE COURSE

So what can be the outline of an English literature course we are thinking of for our students? It is clear we cannot be entirely radical, given the state of our English and its literature. Perhaps we cannot yet think of an Indian English literary tradition though presumably efforts are being made in that direction. Here we need to lend our thought in arriving at a perspective. So long as a perspective is not achieved, we have to keep up our study of British English literary and critical tradition, but with a minimum of its texts, much like what Gauhati University (GU) did in the revision of its English Honours syllabus at the turn of the 20th century. The GU in that revision had only about half of its total nine hundred marks set for literature written in England, and of the other half some marks had been set for written English or creative English, some marks for Indian writing in English and some marks for literary terms not strictly English. Thus the GU Honours syllabus was a reformed syllabus, and we can say, responsive to the need of the time. It had broken away from the tradition of British English literature and sought to create a new tradition in syllabus design in accordance with the reality of English and English literature in India.

One difficult area in an English Honours syllabus today is literary criticism which is till today mainly British. The aim in a revised syllabus among a section of scholars is to introduce Indian poetics along with western poetics for interpreting English literary texts. We need to think carefully here in our effort to make English literary study useful in Indian context.

Unfortunately, that effort by the GU did not last; the GU for unknown reasons returned to the old tradition of syllabus design. Nevertheless, we must not stop trying to free ourselves from the grip of the old unprofitable thinking, and work for a better order of things.

####

## GLOBAL WARMING, CLIMATE CHANGE AND FOOD PROBLEM

Arun Kumar Sen  
Principal, i/c

Food, clothing and shelter -among the three most fundamental necessities of life, food is the first and foremost necessity. Human civilisation is at its peak today and it is claimed that we have achieved a lot in the field of production to meet our basic needs. The process of invention and production of new and more and more sophisticated articles for enhancing the comfort and standard of living of people is continuing at increasing speed and dimension. But yet we are not able to meet our food requirements fully and food problem is becoming more and more serious in many parts of the world including India. That food problem may assume a serious dimension worldwide in near future is quite evident at the moment. In view of the anticipated severe food crisis in the coming days, the scientists and statesmen over the globe have already expressed their concern. It is not only the underdeveloped and developing countries that will face the problem, but even the highly developed countries like USA cannot remain unaffected by the probable food problem.

There may be a variety of reasons for the food problem that we are facing now and are likely to face in a bigger way in future. But these days, global warming and climate change is considered to be a major contributing factor to the growing food problem worldwide. Many scientists and statesmen have already expressed their serious concern that in the future world the major factor responsible for food crisis will undoubtedly be what is called Global warming and climate change. The adverse effects of global warming and climate change are already there to see. Global warming is directly responsible for reducing productivity of agriculture by causing injury to plants. Acid rain severely affects plants, damages them and reduce their productivity.

The undesirable changes in climate due to global warming prove to be a serious handicap in the production of agriculture. The adverse changes in climate and its uncertain behaviour hamper agricultural operations and as a result, production suffers. It is seen that as a result of climate change severe droughts occur in some areas while other areas are flooded with heavy rainfall. Both the extreme situations are detrimental to normal agricultural practices. It is witnessed that when our farmers need water, there is no rainfall; and when they don't, there is heavy rainfall. Obviously agricultural production suffers and food problem becomes acute.

As a result of industrialization and urbanisation, the rate at which the level of green house gases, particularly that of Carbondioxide ( $\text{CO}_2$ ) is increasing in the atmosphere, it is feared that there is every possibility of the global temperature to rise 1.5 degree Celsius to 4.5 degree Celsius by the middle of the present century. If this happens, and there is every possibility of happening so, then the ice-cover of the Antarctica, Greenland and the glaciers will start melting at a faster rate. As a result of that the sea-surface may rise by 0.5 meter to 2.5 meter. That such a situation will bring widespread and unbearable disaster for the people is beyond doubt. Many coastal areas and islands will sink into the seas. There will be a large-scale migration of the affected people to other parts of the globe. Consequently, unemployment, poverty and food problem will assume a miserable form.

Global warming will lead to acute water shortage in the coming world. This, in turn, will worsen food problem all over. We know that the source of waters flowing in the rivers is the glaciers. Water flows continuously to the ocean from these glaciers. In turn this water again, in the form of vapours, returns to the glaciers. This freezing and melting process goes on in a cyclical way. However this process is now

being disturbed and distorted due to increasing global warming. Due to the excessive melting of ice, the rivers fail to carry such a huge amount of water and so there is untimely floods. This hampers agriculture and as its obvious consequence, there occurs food crisis. On the other hand, as the scientists and researchers point out, although water vapours come out from the ocean, they are brought down on the way as rain, due to the increasing warming of the earth, before they could return to the glaciers. And that is why many parts of the globe now-a-days often witness heavy rainfall during the wrong seasons. Thus when we need water, there is no rainfall and when we don't, there is heavy rainfall. Both the situations are responsible for hampering agriculture and worsening the food problem.

Scientists fear, if the process of warming goes unabated, a time will come when the glaciers will cease to exist. Such a situation will be disastrous for a large number of countries of South America and Asia including India and China. The worst effect will be witnessed in agriculture and food production. If the source of river water i.e., the glaciers become non-existent, then many rivers will dry up. This will directly affect agricultural production and food shortage will multiply.

Mention may be made here that it is not only global warming itself which is responsible for food shortage, even some of the measures to combat global warming are also responsible for worsening the food shortage. At present there is a growing tendency in many countries to reduce dependence on the use of green-house gas generating fossil fuels and instead increase the production and use of bio-fuels. But the measures adapted to increase the production of bio-fuels have produced a negative effect on the production of food. The concerned governments are providing various incentives for production of bio-fuels feedstock. Although such a government policy is likely to encourage farmers to produce more and more feedstock of bio fuel, but it has an inherent danger and the food problem is likely to become more acute. This is because attracted by the government incentives and higher profitability, many farmers are now induced to produce more and more feedstock of biofuel in their fertile lands instead of producing traditional food crops. Such a tendency among the farmers will add a new dimension to the food problem, many experts opine. It means, the production of feedstock for biofuel such as palm jatropha etc. is being increased at the cost of the production of food crops. The availability of land for production of food crops is being reduced. As palm oil is being increasingly used as fuel, so its availability as edible oil is being reduced. In view of this, the experts feel the urgency of formulating and adopting a suitable policy about biofuel.

If food production suffers because of increasing production of biofuels, then heavily populated countries like India will face disaster. Since the production of biofuel is also one of the reasons for increasing food problem in several countries, so the major palm oil producing countries like Malaysia, Indonesia and also India are in favour of urgent review of policy about this. These countries are of the opinion that if the use of fertile lands for production of biofuel is not stopped, then food problem will multiply in the near future.

It is true that food crisis has not yet become so serious in the world. But at the same time it is also true that if the matter is not taken seriously right now, the problem will assume a serious turn in near future. Many indications of this are already evident.

In parts of India, food production is being hampered due to lack of rainfall. On the contrary, lakhs of hectares of croplands are being washed away by flood waters in other parts of the country. As a result, there is a downward trend in food production. In such a situation, agricultural scientists have cautioned, our country may face severe food crisis in near future.



Like India, our neighbouring countries such as Bangladesh and Nepal are also confronted with the same problem. According to sources in the Health and Family Welfare Department of Bangladesh, more than three crores of people in the country are victims of food crisis and malnutrition.

The downward trend in the production of food is also a feature in another neighbouring country Nepal. In Nepal, there has been very little production in some districts consecutively for five years or so. At present lakhs of people spread over about nine districts of the country are facing serious food problem. This is due to a fall in the food production in those areas, according to the Nepal branch of World Food Programme. And the culprit for this again is obviously the uncertain character of climate and rainfall due to global warming.

North Korea, another Asian country has been facing food problem for about two decades since 1990, which has further worsened in recent years. As per the recent survey of World Food Programme, about half the population of that country remain hungry and they are bound to feed on grass and leaves to survive.

Not only the developing countries, the developed countries are also likely to be affected by food problem in the days to come.

The world population is likely to touch the nine billion mark towards the middle of the present century. If a serious thought is not given to the problem of food right now, then we will not be in a position to avert a tragic human disaster in near future.

\*\*\*

*Recipients of Scholarship 2010*  
**NABIN CHANDRA COLLEGE, BADARPUR**

**DOREEN SCHOLARSHIPS**

- |                          |              |
|--------------------------|--------------|
| 1. Jyotika Singha        | (HS Passed)  |
| 2. Hanifa Begum          | (TDC Part-I) |
| 3. Debabrata Deb         | (TDC Part-I) |
| 4. Nasim Ahmed Barbhuiya | (TDC Part-I) |



**MAHMUDHA BEGOM MEMORIAL SCHOLARSHIPS**

- |                 |              |
|-----------------|--------------|
| 1. Ahmad Faiz   | (TDC Passed) |
| 2. Hanifa Begum | (TDC Part-I) |

**GAAZI SIKENDER AHMED MEMORIAL SCHOLARSHIPS**

- |                     |               |
|---------------------|---------------|
| 1. Md. Fakhrullslam | (TDC Part-II) |
| 2. Hanifa Begum     | (TDC Part-I)  |

**PANCHAYAT SYSTEM IN ANCIENT INDIA**

Santosh Kumar Dey  
Associate Professor, HOD of History

The concept of Panchayati Raj is a recent phenomenon but there is strong legendary and historical tradition that village panchayat have been in the country since the dawn of history and they have out lived and survived all changes and upheavals of time. The word panchayat literally means governance by a 'council of five'. It is often referred to as the grass root level of democracy. It is an institution of local self government at the village level. Since ancient times in India a sort of village council or an association of the residence of the village often consisted of village elders, herein the gram sangha or the panchayat performed distinct administrative and judicial functions. Village panchayat formed an integral part of the national life. It helped to preserve democratic tradition in social, cultural, economic, and political life.

In ancient literature 'Rig Veda', we find references that the republican form of society existed in India from the most ancient times. In various times the society coalesced around monarchical forms, but the republican societies did not die out, but maintained their existence with remarkable resilience. The forms of governing society are that of the 'sabha' or 'samiti' i.e. gathering/ assembly. The sabhapati, the president of the sabha was elected. The 'sabha and samiti' enjoyed greater importance. We possess no definite information about the composition and the distinction between the two. Most probably the samiti, which mainly dealt with the political business, included the common people, while the sabha less political in character, was a more select body of the aristocrats. They wielded great power and authority in administration, and worked as great checks to the arbitrary power by the king. Political affairs were freely discussed in these bodies. Their ideal was a harmonious activity of the different members of the assembly, and this is beautifully set forth in the concluding hymn of the Rig Veda:

"Assemble, speak together, let your minds be all of one accord. The place is common, common the assembly, common the mind, so be there thought united. A common purpose do I lay before you. One and the same be your resolve, and be your minds of one accord. United be the thoughts of all that all may happily agreed.

The term 'Rajan, Rajanaya' has been taken to denote a monarchical system. A closer look shows the term was used at that time for the house holder, the head of the household, and he would participate in the sabha or assembly. In later times this took on a monarchical connotation, as raja Maharaja; a term familiar to most of us.

Manu smriti or code of Manu has reference of Gram sangha. Gram sangha also finds importance in the epics such as Mahabharata and Ramayana. Moreover Kautilya's Arthashastra and Nitishastra of Sukracharya also contain mention of the Gram sangha or sansad. Nitisastra deals with science of polity. It deals with the organization of the Central Government as well as of town and village life; of the king's council of state and various departments of government. The village panchayat has large powers, both executive and judicial and its members were treated with greatest respect by the king's officers. Land was distributed by this panchayat, which also collected taxes out of the produce and paid the Government's share on behalf of the village. Over a number of these village councils there was a larger panchayat or council to supervise or interfere if necessary. These village councils were very jealous of their liberties and it was laid down that no soldier could enter the village unless he had a royal permit. The Nitisastra

says that the king was to act in accordance with the opinion of the majority of the people. Public opinion is more powerful than the king as the rope made of many fibers is strong enough to drag a lion.

In the Buddhist period there were regional councils or Janapadas, city councils or Nagara Sabha as well as Paura Sabha and the village assemblies or Gram Sabhas. The decentralization of power in the time of Maurya and Gupta period was unique. The local government at different levels, performing many functions, though not very democratic, was sufficiently autonomous. Megasthenes gives in his book a detailed account of the excellent municipal arrangements which prevailed at the imperial capital, Pataliputra. The affairs of the imperial city were carried on by a committee of 30 members. The committee was subdivided into six standing committees or boards of five members each. These committees did all that the municipal committees do today.

In the texts of Panini and Buddhist text we find references to 16 republics or Great Republics Janapadas or Mahajanapadas. We find references to names of republics like Mall, Liechavi, Sakya, Gaudheva, Angreva and soon. They dominated the north Indian landscape in what is now Punjab, Sindh, Rajasthan, Haryana and Uttar Pradesh.

However, a number of villages grouped themselves into a Gohand. A number of Gohands formed a 'Khap' and a number of Khaps formed a 'Sarva Khap' embracing a full province or state. For example, there was a "Sarva Khap" each for Haryana and Malwa. At what level a panchayat should gather depended upon the magnitude of the problem and the territory it involved. Sarva Khap Panchayat (council) represented all Khaps. The individual Khaps would elect leaders who would send delegates, to represent the Khaps at the Sarva Khap level. It was a political organization, composed of all the clans, communities and castes in the region. Negotiations with kings were done at 'sarva khap' level.

The ancient Kshatriyas have always organized themselves into clans or under panchayat system. A clan was based on one large Gotra (clan) or a number of closely related Gotras under one elected leader whose word was law. Mutual quarrels of any intensity could be settled under his orders. In time of danger, the whole clan rallied under the banner of the leader.

There was a remarkable growth of local self-governing institutions such as village communities and district unions in South India. The inscriptions throw a much of light on their work. The village corporation at the time of the Cholas practically exercised all the powers of a state within its narrow sphere of activity, and was looked upon as an integral part of the constitution. It had extensive judicial powers and could regulate the market, impose taxes and even levy extra tolls for specific objects of public utility. The government recognized the heavy responsibility of the corporation and empowered them to regulate the payment of government dues with a view to the actual condition of the country. The provision of drinking water and proper maintenance of garden, irrigation, educational and charitable institutions and means of communication demanded special care of the village corporation. The corporations possessed absolute authority over the village lands and were generally left undisturbed in the internal management of the villages. Even the royal charter effecting the status of a village had to send for approval of the village assembly before it was registered and sent to the record office. Assembly (Sabha, Mahasabha) was the supreme governing body of all these village corporations and exercised full authority in all matters concerning the village. Its constitution differed in different localities and probably also at different times.

Thus, the panchayat system was territorial and democratic. Every village had its own Panchayat. Whenever there is a problem or dispute in the village, a gathering of the panchayat is called for. Every member of the village has a right to attend, express his views and vote for and against a proposal. There was no elected or nominated Panchayat official. But nevertheless, some persons, by virtue of their wisdom and eloquence, are automatically accepted as Panches, (one of the five) and their views are heard and respected. While elders discuss a problem it is customary for younger people not to speak but sit and listen. All decisions are taken after open hearing.

All this information is very fragmentary but it does appear from this that there was a widespread system of self-government in towns and villages and the central Government seldom interfered, so long as its quota of taxes was paid. The existence of bodies in ancient time is a positive proof of the inherent genius of the people to manage the local affairs efficiently and on a decentralized basis. It can be concluded that the Panchayat system is almost pre-historic and indigenous to the Indian soil. Municipal Government flourished in India since time immemorial. No ancient nations including the Greeks and the Romans, ever hit upon this political expedient which alone could reconcile the principles of democracy with big territorial expansion. The political genius of India alone evolved this machinery in politics which was to work miracles in other lands in subsequent ages.

#### References:-

- (i) J P Shamlal - Republics in ancient India.
- (ii) Steve Muhlberger :- Democracy in Ancient India .
- (iii) J L Nehru:- The Discovery of India.
- (iv) R C Majumdar:- History of Ancient India
- (v) S N Sen:- Ancient Indian History and Civilization.
- (vi) A History of India :- Romila Thapar.

\*\*\*\*

#### JOKE

- Teacher : Why did you fare so bad in geography?  
 Student : Madam, my father told that the world is changing day by day.  
 Teacher : So, What?  
 Student : So Madam, I didn't study?  
 Teacher : But why?  
 Student : I think I should wait until it stops changing.



*"Friends we are the future of our society and country.  
 So keep trying to develop ourselves.  
 Our country will automatically develop."*



## NAJIB MAHFUZ : A BRIEF SKETCH

Dr. Fazlur Rahman Laskar  
Asstt. Prof. of Arabic

Najib Mahfuz occupied the same eminent place in the development of novel as Mahmud Taymur in the case of short story and Tawfiq at Hakim in drama. He was the third Asian after Rabindra Nath Tagore (India) and Wabata Yasarovi (Japan) to be awarded Nobel prize in literature. Nobel Academy of Sweden had appreciated his contribution to Arabic novel by choosing him for Nobel Prize winner in literature in 1988.

Najib Mahfuz was born in a middle class merchant family in 1912 AD in old Cairo. He was the youngest among his four brothers. His real name was Abdul Aziz Sabili. Najib Mahfuz lived first in at Jamaliya, the thickly populated heart of Cairo, then his family moved to at Abbasiya. He took his primary and secondary education in his native villages and graduated in philosophy from Cairo University in 1934 AD. In the early ages, he was interested in mathematics and medicine. Later on, he was inclined towards philosophy due to the philosophical writings of Abbas Mahmood al Aqqad and Ismail Mazhar.

After the completion of graduation, Najib Mahfuz worked in the administration of Cairo University from 1936-1939. Then he served in the Ministry of Waqf Department, devoting his time in creative writings. He started to publish articles, short stories, translation works from English novels in "Majalla al Jadida" "The New Journal" edited by Salma Musa, "al -Risala" etc. He worked for the development of cinema in Egypt and became the Director of censorship for the Art and Director for cinema Affairs at the Ministry of culture. The Egyptian government bestowed on him its highest honours: The state prize for literature and the Collar of the republic.

The thinkers and writers who made impact on Najib Mahfuz were -Chekhov, Turgenev, Walter Scott, Salma Musa, Taha Hussain, Abbas Mahmud al-Aqqad and others.

Najib's first collection of short stories appeared in 1938, in which sex has been predominantly treated. In the field of novel, his early writings have treated historical topics. His first novel Abathul Aqdar (The Game of Fates) was a historical romance which was published in 1939. This was the beginning of nationalistic and historical novel writing in Egypt. Rhodopis appeared in 1944 and Kifah Tiba (The struggle of Theber) in 1944.

In the art of historical novel writing, Najib Mahfuz had been greatly influenced by the work of Sir Walter Scott, a historical novelist of Britain. Pharaonic culture and culture ethos Egypt had been the major corner stones of the nationalistic movement in Egypt in which Najib participated under the influence of Salma Musa. After the downfall of pharaonic movement, Islamic movement caught hold of the public imagination in Egypt, which resulted into an intellectual shift in Najib's writings from ancient history to contemporary social reality. He started writing novels with social themes in which Khan al- Khalili (1945), Al-Qahira al Jadida ( 1946), Zuqaqul Midaqq ( 1947), AL- Sarab ( 1948) and Bidaya wa Nihaya ( 1949) are worth mentioning. In these novels, the novelist has tried to show the way the people get affected by the way sins and crimes are committed and the way human values got degraded.

Najib Mahfuz published in 1956, a collection of three novels -Bain al-Qasrain, Qasrul- Shawk and al- Sukkariya. This trilogy established Najib Mahfuz's name for good in Egypt, entire Arab world and outside the Arab world.

Later on, Najib Mahfuz produced another six short novels within 1967, within 1987 another 16 works also published by Najib Mahfuz.

Najib Mahfuz was the greatest novelist in modern Arabic literature. He was known as one of the selected novelists of the world. His novels don't only have the depiction of Egyptian society but also reflect the global dimension of human life across the planet.

## WOMEN AND DECISION MAKING - IN THE FAMILIAL ARENA

Babli Paul  
Asstt. Prof., Deptt. of Pol. Sc.

Making of Decisions imply power and authority. Decision maker in the family is the person who exercises control over the affairs of the family. Decision maker in the family may be husband, wife or both or any other member or members depending upon the relative power they exercise in the family in relation to others. Women's participation in decision making process is a yardstick for measuring the actual powers and position that they enjoy vis-a-vis the men in their families.

Usually in all patriarchal societies the women have very little role in decision making within the family. However, the extent of participation in the decision making varies depending upon the nature of the families, the place of residence, educational levels, earning capacity, nature of employment and on their age, socio, economic status and cultures.

Earlier when the joint-family system was the norm, the women were generally not involved in the intra-family decision making process even in decision pertaining to their own lives. In such type of family, authority to take decision was solely vested in the eldest male member of the family. He used to make all important decisions without consultation of other adult members of the family including the women. Men in such type of family used to enjoy superior position in all familial matters leaving a very limited space for women in the decision making arena. The women were considered neither knowledgeable nor competent to make major decisions. But they were allowed to exercise some powers in matters relating to household management.

In short, in the traditional joint families, the individual were subordinated to the system and the women are not only ignored but also denied any role in the decision making process. However, with the passage of time, the traditional pattern of joint family system were declining fast and nuclear families are becoming the norm especially in the urban areas. In the nuclear families, the women enjoy more power in intra family decision making process. The different factors such as education, employment, nature of job etc. play considerable role influencing their role in family decision making as well as elevating their position in the family.

Education is recognised as the pre-dominant factor in determining the women's status in the families. Education sharpens the verbal skills as well as generate self confidence in women which can be positively used in decision making. Education helps to promote joint decision making in many of the families where decisions were earlier made by men. The higher educational status generally results in better authority structure in the family which is manifested through moderate decision making process in the family.

The increasing opportunities for higher education have created more opportunities for the women to go in for remunerative work. Employment of women outside their home heightens their bargaining powers which in turn can positively be linked to their decision making powers as the presence of educated and employed wives further limits the scope for autonomous decision by males. Direct access to economic resources not only improves the status of women but also enhances the relative bargaining position of women vis-a-vis their male counterparts in their families. Different studies have found that compared to

the status of unemployed women, the employed women are the effective decision makers in their families particularly with regard to the matter relating to their professional career, family budget and children centred matters. Working women not only can participate in decision making vigorously but also can make their presence felt almost in all aspects of family life.

However participation in economically gainful activities may not automatically raise the status of women. It may to a some extent depend on the nature of the job performed by women. Generally the women engaged in the white-collar (official job) enjoy better position within the orbit of the family compared to the women engaged in blue-collar job (manual work).

Women however are still not free from patriarchal control. Education and employment no doubt have enhanced their bargaining power in the family but the cultural factors still seem to have considerable grip over the different sections of women in the society. Patriarchal values and ideologies continue to transfix women in familiar social roles. Sex based prejudices and stereotypes against women cannot be banished altogether. They are very deep rooted and spread across the different segments of the society. Thus a modern woman with sound education and earning status, though enjoys more powers and exerts greater influence in intra-family decision making, the final decision in most of the cases always lies with the male authority of the family. However, while making such generalisations we should keep in mind that the actual power that a woman exercises in the family decision making process varies from culture to culture and depends on community, religion, region as well as socio-economic background to which she belongs.

*Commerce Department of NABIN CHANDRA COLLEGE is running UGC - Sponsored Career Oriented Course namely Marketing Management, Entrepreneurship Development and Computer Application in Business.*

*Interested TDC students of all streams of the College can meet the Head of the Department for details.*

## RATIONALE OF BANKING SECTOR REFORM IN INDIA

Hedayatullah Choudhury  
Assistant Professor, Deptt. of Commerce

### Commercial Banking during Pre-Reform period:

Prior to 1969, all banks except State Bank of India (SBI) and its seven associate banks were privately owned. However, there was an opinion among policy makers that under the private ownership the rural and most part of semi-urban areas remained unserved by banks. Further, as India increasingly became a planned economy, they felt that it would be difficult to undertake credit planning for the industries without nationalization of banks. These considerations sparked off the drive for 'social control' of banks by the government of India (GOI) and under the nationalization Act of 1969. As a result, fourteen privately owned commercial banks were nationalized. In 1980, Govt. of India acquired the ownership of other six more banks, bringing the total number of nationalized banks to twenty. The privately owned banks, on the other hand, were allowed to function side by side with nationalized banks. However, the foreign banks were allowed to continue their function under strict regulation. The extent of commercial banking since nationalization is shown in the following table. The table discerns that there is significant expansion of the banking sector between 1969 and 1991 on the basis of all major development indicators such as number of branches, deposit mobilization, credit disbursed, per capita deposits, and per capita credit.

### PROGRESS OF COMMERCIAL BANKING 1969-1991

Indicators	June 1969	March 1980	June 1985	March 1987	March 1991
<b>1. No. of commercial Banks:</b>	71	153	267	276	272
a. SBI and its Associates (SBI group)	8	8	8	8	8
b. Nationalized Banks (NBs)	14	20	20	20	20
c. Private Sector Banks (Pvt. Banks)	36	104	31	33	25
d. Foreign Banks (FBs)	13	16	20	21	23
e. Regional Rural Banks (RRBs)	-	5	188	194	196
<b>2. No. of Bank offices in India:</b>	8832	32419	53165	53565	60646
a. SBI & its associates (SBI group)	2602	8351	10742	10833	12461
b. Nationalized Banks (NBs)	4617	20511	25145	25485	29812
c. Private Sector Banks (Pvt. Banks)	1483	2719	4540	4202	3703
d. Foreign Banks (FBs)	130	136	136	136	139
e. Regional Rural Bank, (RRBs)	-	-	12602	12909	14531
<b>3. Quantitative expansion:</b>					
i. Population per office (,000) Nos.	64	20	15	14	14
ii. Deposit per office (Rs. bn)	16.6	13.2	12.0	15.1	18.3
iii. Credit Per office (Rs.bn)	13.0	10.1	7.9	8.3	11.0
iv. Per capita deposit (Rs.)	261.1	440.1	818.2	1374.2	1296.1
v. Per capita credit (Rs.)	201.7	316.2	540.7	618.6	784.9
vi. Share of rural branches to total branches (in per cent)	22.2	46.9	58.7	56.2	58.5

Source: Banking Statistics and RBI Annual Report



From the above table it is clear that the Commercial Banks made a positive progress in different angles in between 1969-1991. The share of rural branches increased from 22.20% in June 1969 to 58.5% in March 1991. This indicates that the banks had performed the duty of expanding banking practice in the rural or backward regions of the country.

### **The Need of Financial Sector Reform:**

After gaining independence in 1947, India followed the soviet model of planned economic development with emphasis on heavy industries and self-sufficiency. More over, in 1954 it adopted the goal of socialistic pattern of society that necessitated curbing attention of economic power in a few hands. Coupled with pessimism on exports the whole development strategy in India centered on direct intervention of the state in terms of providing direction, controls, regulation and even direct participation in economic activities. The restrictive interventionist policies meant the existence of a complex structure of permissions, licenses, quotas, rationing and absolute bans in many spheres including industrial production, infrastructural facilities, raw-materials, credit, foreign exchange and trade. In short, government policy interventions have distorted the price and quality signals in all three markets -goods, money and factors. The wave of economic reform in India started in 1985 with internal liberalization in respect of like selective price decontrol and deregulation of industries, increased exchange rate adjustments, monetary policy reforms and so on.

The major objectives of these reforms were particularly to attain the productivity with the help of modern technology. The basic thrust of the new reforms was to assign greater role to the private sector. To provide a level playing field to the private sector, a number of changes in policy were introduced with regard to the industrial licensing, export import policy, foreign direct investment (FDI), rationalization and simplification of the system of fiscal and administrative regulation.

The aforesaid economic reform policy measures had not produced with desired result rather the country faced a serious balance of payment crisis in the later period. The country earned high percentage of current account deficit. The foreign exchange reserves had plummeted to US \$ 1.2 billion, barely sufficient to pay for two weeks of imports. The fiscal deficit of the country for 1991 accounted 8.50% of GDP. Industrial production was falling and inflation was rising which touched all time high to an uncomfortable level of 170% by mid 1991. The current account deficit constituted 3.50% of GDP in 1990-91. The country was on the verge of defaulting on its external debts. To overcome from the situation particularly to maintain external liquidity, the Govt. transferred abroad a part of country's gold stocks.

This macro-economic imbalance led the govt. of India to conceive the idea of pursuing economic reforms. In mid 1991, India was forced to seek assistance from the International Monetary Fund and World Bank to provide a huge loan of about \$7 billion to bail India out of the crisis. The World Bank and IMF while agreeing to provide assistance to India, insisted that it must put its economy back on rail.

On June 21, 1991 Govt. of India (GoI) initiated new economic reforms which were differed precisely from the earlier because they recognized the need for a systematic change, larger role for private sector, greater integration with world economy and liberalization of Govt. control. Though the outline of the economic reform was not much different from the reform policies undertaken by many developing

countries, but the pace of implementation of such policies was at a slower rate. The economic reforms 1991, adopted a number of stabilization measures that were designed to restore internal and external confidence. Monetary policy was tightened through increase in interest rates; consequently the exchange rate of the rupee was adjusted.

As apart of the economic reforms, a number of reforms have been introduced, since 1991, in the financial sector. The financial sector reforms programme follows the well known path of deregulating capital markets and banks, interest rates, withdrawing directed credit and subsidies and encouraging stricter income recognition norms and integrating the domestic financial market with global financial flows. The objective of financial sector reforms was to make the financial sector more efficient as well as to put an end to the so called 'financial repression' that had held back the growth of financial savings and their efficient canalization into industrial activity.

### **Constraints Experienced by Commercial Banks:**

The banks played a positive role since nationalization in institutionalizing the community savings. They emerged as the purveyor of credit requirement of the small borrowers. An excessive focus has been laid on quantitative achievement and social obligations at the expense of achieving profitability and efficiency. On the other hand, the reason of expansion of bank branches may be attributed to develop a strong banking base to serve the economy efficiently and meet the banking needs of various segments of the economy by developing specialized banks.

As a result, to achieve the first aforesaid objective there is a need for consolidating the wide spread banking based which led to high percentage of Non Performing Assets (NPAs), preponderance of less remunerative populist lending programmes "excess staff" and over extended branch network and low propensity for adopting modern technology. These factors impaired the efficiency of banks in general, though there are a few exceptions.

The banks were introduced into the banking arena particularly to provide banking facilities in certain specialized fields that were not well developed. They brought about an element of competition for PSBs by extending of business units. Thus they grabbed the cream of remunerative business of older banks, and further weakening their profit earning capacity. However, the environment in which banks operated is characterized by extraordinary high level of pre-emption of bank resources through statutory liquidity ratio (SLR) and cash reserve ratio (CRR); insufficient attention to prudential accounting norms and capital adequacy. Excessive recourse to subsidized credit channeled through unduly complex system of administered interest rates; lax in regulation and supervision of banking operation; inadequate internal control and rigidities in personnel policies and management structure; political interference; inconvenience and non-uniform system of loan recovery of banks.

As a result, banking system was virtually bankrupt and ill suited to the task of allocating credit and performing ordinary banking business. Thus stronger doses of reform measures are required to improve their health.

### **Banking Sector Reform in India:**

The government of India employed a committee under the chairmanship of M. Narasimham, Ex-Governor of Reserve Bank of India to address the problems and suggest remedial measures. The committee had

identified the following as the major issues confronting the operation of Indian banks -

- Constant erosion of profitability of banks.
- Social Banking had tended to depress the potential income of banks.
- Directed investments also affected profitability of the banks adversely.
- The phenomenal expansion of branches is un-remunerative.
- Accounting practices are not uniform and the true position of banks is not transparent.
- Excess administrative and political interference.
- The committee submitted its reports on November 1991. It recommended gradual deregulation of banking sector and financial sector in general. The recommendations included
- A reduction of statutory liquidity Ratio (SLR) to 25 pc over the next five years with a reduction in current year itself.
- Reduction in the CRR to 10 pc, payment of interest on the CRR and use of CRR as an instrument of monetary policy,
- Gradual phasing out of the directed credit programmes by redefining the priority sector. The stipulation that 40 pc of all credit should go to the priority sector. Priority sector should be defined as "small & marginal farmer, tiny sector of industry, small business and transport operations, village and cottage industry, rural artisans and other weaker section" and should be fixed at 10 pc of aggregated bank credit.
- Deregulation of interest rates in a phased manner and bringing interest rates on government borrowing in the line with market determined rates-
- Attainment of Basle norms (HIS) for capital adequacy in a phased manner, 4 pc by March 1993 and full 8 pc by March 1996.
- Tightening the prudential norms. It is necessary for banks to follow a uniform practice of income recognition, valuation of assets and provisioning against doubtful debt.
- Bringing more transparency in the banks balance sheet.
- Accelerating the pace of loan recoveries and tackling doubtful debts through establishment of assets reconstruction fund (ARF) and debt recovery tribunals (DRTs ).
- Entry of private banks and easing of foreign banks.
- Sale of bank equity to public.
- Phase out the development finance Institutions (DFIs) to access to fund.
- Increased competitions in lending between DFI, and a switch from consortium lending to syndicate lending.
- Easing of regulations on capital markets, combined with entry of foreign institutional investors (FIIs) and. better supervision.

\*\*\*\*

## "PEOPLE'S ATTITUDE TOWARDS THE RIVER BARAK: A STUDY OF BADARPUR SUB-DIVISION, ASSAM"

Anuradha Singh  
Asstt. Prof. Economic  
Ananta Pegu  
Asstt. Prof. Economic

Water resources are one of the precious gifts of nature to human kind. It is a vital necessity for the existence of life form. But, in today's world of industrialization people are creating damages to these resources either directly or indirectly. The man induced global warming forms the most important factor of the ever changing climate, bringing alterations in the frequencies of flood and droughts due to the change in trend and pattern of the rainfall. From the time immemorial rivers have been valued as these are life sustaining. But, it is seen that the increasing human activities, aggravated the climate change and global warming as a result of accumulation of green house gasses like carbon-di-oxide, methane etc in the atmosphere affecting the pattern and nature (both quality and quantity) of the water resources/rivers. During the summer the river gets over flooded, while, during winter it dries up and the drainage capacities are reduced due to silt deposition. Further the problem of water contamination due to the human activities is also increasing significantly. People are mainly responsible for water resource degradation, hence, water management for sustainable development would be successfully accomplished only when the people became concern and aware about their doings and its effect.

Assam, one of the largest states of the North Eastern Region (NER) of India is highly endowed with the large number of water resources. But, these resources are facing the similar problem due to the natural as well as the man made forces. River Barak of Assam- the second largest river in the NER of India sustains million of people. The Barak basin is spread over India, Bangladesh and Burma and drains an area of 41,723, sq km in India. It is the perennial source of water to the people of Barak Valley providing various ecological and economic services.

The Barak is the source of the assured water supply to the agricultural fields, basically, through the lift irrigation system where pump sets are utilized to draw water from the river. Its basins provide the fertile soil. Fishing is another activity practiced in the River Barak, generating a good amount of income and also for meeting the rural people's livelihood. It provides the cheapest mode of transport of various cargos and the commodities. The Barak has a good hydro power potential. As per the latest assessment, the hydropower-potential in the basin is 2042 MW at 60% load factor. But, bulk potential remains to be explored (Central Water Commission). Apart from these, the forest cover of the Barak basin helps in maintaining the ecological balances; it helps in preventing soil erosion etc.

In spite of its huge importance and significance, due to the increasing population multiplied by their desire to attain higher economic growth the Barak River is increasingly polluted. The establishment of Industries and Mills near by the River degrades the water quality to a large extent due to the dumping of sewages, the waste products and the chemicals from the industry. As for example, The Paper Mill in Pachgram and the BVCL industry severely affect the Water quality of Barak River. The process of dumping all kind of waste materials and affluent is increasing day by day, exceeding the carrying capacity of the River, hence the water gets contaminated. Various effluents and sewages from households and industries fall into the river Barak, making it unsuitable for various household purposes and leading to the wide spread of various water born diseases. Again, such kind of degradation in water quality effects the survival of aquatic life and also affects fishing activity and their commercialization. Sometimes immersion of idols in the Barak causes damage to the water quality. In Barak Valley, after puja, idols of God and Goddesses are used to immerse into the Barak River. Various chemicals, paints, plastic and other insoluble



ornaments which are used in the making and decorating the idols, produces numerous negative effects to the water, resulting into water pollution and the death of aquatic life. Barak River is over flooded annually that are further exaggerated by the deforestation (by human activities) in the form of soil erosion, sand casting, sedimentation etc. Due to the global warming, changes have been brought into the hydrological realm of the River and the weather and climate; this is primarily of anthropogenic origin.

It is the Man who in the verge of attaining higher growth and development, exploiting the very basis of their development. Water is the natural capital which needs to be conserved for the development of the Valley. Only Government's action will not be sufficient unless it is accompanied by active co-operation of the local people of the valley. For this it is necessary to analyze whether the people are concerned about the conservation of such resources. With this view point, in this paper, it is attempted to assess the opinion or the attitude of the local people of Badarpur locality of Barak Valley towards the Barak River. For this, information have been collected from the households residing in the extreme bank of river Barak i.e. Dighirpar village of Badarpur sub-division, under Karimganj district. And for gathering information the method of face to face interview was conducted. A simple tabulation and percentage calculation were done in analyzing the data.

#### ANALYSIS AND FINDINGS:

Four questions were presented to the households and they were asked to reply in the form of 'agree', 'disagree' or 'neutral'. This are -

- Question 1: for the economic growth and employment generation, should government construct any Industrial set-up near to the Barak river, which may pollute the river water?
- Question 2: should people pollute the River water of Barak for their vested interest?
- Question 3: should present generation take any interest or step, by sacrificing their time and money, for the conservation of River water for the future generation?

**Table 1: Household's attitude towards the River Barak:**

Questions	Percentage of households		
	Agree	Disagree	Neutral
Question 1	81.25%	15.62%	3.12%
Question 2	31.25%	68.75%	----
Question 3	90.62%	6.25%	3.12%

As presented in the above table 1, out of the total, 81.25% household agreed that the industrial set-up is required for employment and income generation even if the River gets little polluted. While, only 15.62% households disagreed the industrial set-up near the Barak and 3.12% were neutral. This shows that most of the household were ready to accept the water pollution in compensation of the employment and income generation i.e. for the economic growth and development. This means, to them the problem of unemployment and lack of income is more acute problem than the water contamination.

About the second question, 31.25% asserted that people should pollute the River for their vested interest. But, 68.75% disagreed. This particularly gives the picture that most of the households are pro-environment and they are aware of their limit to use the River. Most of them have the realization of the importance of the River. When the third question was asked, 90.62% of the households agreed that the present generation should take interest or steps for the River water management, sacrificing their money and time for the sake of future generation. Whereas, only 6.25% disagreed the sacrificing of the present generation for the sake of future generation and 3.12% of households shows the neutral attitude in this regard. This displayed that maximum of the households are concerned about the degrading water quality

and the increasing problems of the River. They think that as they are getting benefits from the River, the future generation should also have the opportunity to enjoy the benefits of the River. This reflects the concept of the sustainable development of the River.

In addition to these, the households were asked to state 'for what purpose they want the Barak River to exist. This is presented in the table given below:

**Table 2: Rankin of the Aspects of the River Barak by the Households.**

Aspects/utility of Barak River	Percentage	Importance rank
1. Using the water for households/irrigation	34.37%	1
2. Fishing	15.62%	4
3. using the River as sink (dumping waste)	3.12%	5
4. River transportation.	29.68%	2
5. Natural beauty/ ecological services.	17.18%	3

From the table 2, it is clear that the mostly valued aspect of the Barak River is its supply of water for the household or irrigation, 34.37% household valued it. Second is the river transportation with 29.68% respondents vote. Natural beauty/ecological services and fishing comes third (17.18%) and fourth (15.62%) respectively. Lastly, only 3.12% voted for using the River as a sink. Thus, it is clear that the mostly desired aspect is the using of the River water for household/irrigation purposes.

#### CONCLUSION AND SUGGESTION:

From the above results it is seen that the people of the village were quite aware of the effect of any kind of ill activities towards the River. Here both the pro-environment and the anti-environment opinion were recorded. But, mostly were the pro-environment. It seems that the people are aware about the importance of the Barak and the necessity of its management for the future generation. The sign of awareness and concern among the people were visible, which indicates the possible bright way towards the sustainable development of the Barak River. But, some contradiction arises, when the case of the economic growth and development were presented. Being economically backward and because of the lack of employment and income, people desire to have economic growth and development at the faster rate. So, sometimes; they prefer growth and development through the establishment of industries and mills at the cost of the environmental or the water resource degradation. As both the economic growth as well as water management is important, the cost benefit analysis of any industrial set up and the valuation of the environmental resources may give way to the solution. Side by side more and more spread of environmental education among the local people, along with the awareness campaign regarding the water resources problem of the Barak Valley would be helpful in realizing and achieving the sustainable development of the water resources in the Valley.

#### REFERENCES:

1. 'Brahmaputra and Barak basin', Central Water Commission (<http://www.cwc.nic.in>)
2. Goswami, Dulal.C (2009), "Management of Water Resources of North-East India: Need for an Integrated Regional Plan" ([www.indianfolklore.org](http://www.indianfolklore.org))
3. Mahanta, Chandan (2006), "Water Resources of the North East: state of the Knowledge Base". Background paper No.2. Indian Institute of technology, Guwahati, India.
4. Murthy, D. B.N (2004), 'Environmental awareness and Protection' Deep and Deep publications Pvt. Lm. New Delhi.
5. Rao, P.K (2000), 'Sustainable Development' Blackwell Publishers.
6. 'State of Environment Report Assam-2004'. Assam State Technology and Environment Council.

\*\*\*\*\*

## POSITIVE THINKING - A KEY TO SUCCESS

Md. Iqbal Uddin Tapadar  
Asstt. Prof. of Commerce

Positive thinking brings inner peace, success, improved relationships, better health, happiness and satisfaction. It also helps the daily affairs of life move more smoothly, and makes life look bright and promising.

Positive thinking is contagious. People around us pick our mental moods and are affected accordingly. If we think about happiness, good health and success, and we will cause people to like us and desire to help us, because they enjoy the vibrations that a positive mind emits. Positive thinking is a mental attitude that sees the bright side of life and expects good and positive results. It is a mental attitude that admits into the mind thoughts, words and images that are conducive to growth, expansion and success. Positive thinking is a state of mind, which focuses on the full half of the glass and not on the empty half. A positive mind anticipates happiness, joy, health and a successful outcome of every situation and action. In order to make positive thinking yield results, we need to develop a positive attitude toward life, expect a successful outcome of whatever we do, but also take any necessary actions to ensure our success.

People with a positive frame of mind think about possibilities, growth, expansion and success. They expect happiness, health, love and good relationships. They think in terms of 'I can', 'I am able' and 'I will succeed'.

Positive thinking people are not daunted by failures and obstacles. If things don't turn out well or as expected, they will try again.

True positive thinking is not just saying that everything will be okay, as a lip service, and at the same time think about failure. In order to bring beneficial changes and improvement into our life, positive thinking has to become our predominant mental attitude throughout the day. It has to turn into a way of life.

Real and effective positive thinking requires that we focus on positive thoughts and positive emotions, and also take positive action. Effective positive thinking that brings results is much more than just repeating a few positive words, or telling oneself that everything is going to be all right. It has to be our predominant mental attitude. It is not enough to think positively for a few moments, and then letting fears and lack of belief enter our mind. Some effort and inner work are necessary.

Not everyone accepts or believes in positive thinking. Some consider the subject as just nonsense, and others scoff at people who believe and accept it. Among the people who accept it, not many know how to use it effectively to get results. Yet, it seems that many are becoming attracted to this subject, as evidenced by the many books, lectures and courses about it. This is a subject that is gaining popularity. It is quite common to hear people say: "Think positive!", to someone who feels down and worried. Most people do not take these words seriously, as they do not know what they really mean, or do not consider them as useful and effective. How many people do we know, who stop to think what the power of positive thinking means?

## The following story illustrates how this power works:

Allan applied for a new job, but as his self-esteem was low, and he considered himself as a failure and unworthy of success, he was sure that he was not going to get the job. He had a negative attitude towards himself, and believed that the other applicants were better and more qualified than him. Allan manifested this attitude, due to his negative past experiences with job interviews.

His mind was filled with negative thoughts and fears concerning the job for the whole week before the job interview. He was sure he would be rejected. On the day of the interview he got up late, and to his horror he discovered that the shirt he had planned to wear was dirty, and the other one needed ironing. As it was already too late, he went out wearing a shirt full of wrinkles.

During the interview he was tense, displayed a negative attitude, worried about his shirt, and felt hungry because he did not have enough time to eat breakfast. All this distracted his mind and made it difficult for him to focus on the interview. His overall behavior made a bad impression, and consequently he materialized his fear and did not get the job.

Jim applied for the same job too, but approached the matter in a different way. He was sure that he was going to get the job. During the week preceding the interview he often visualized himself making a good impression and getting the job.

In the evening before the interview he prepared the clothes he was going to wear, and went to sleep a little earlier. On day of the interview he woke up earlier than usual, and had ample time to eat breakfast, and then to arrive to the interview before the scheduled time.

He got the job because he made a good impression. He had also of course, the proper qualifications for the job, but so had Allan.

What do we learn from these two stories? Is there any magic employed here? No, it is all natural. When the attitude is positive we entertain pleasant feelings and constructive images, and see in our mind's eye what we really want to happen. This brings brightness to the eyes, more energy and happiness. The whole being broadcasts good will, happiness and success. We walk tall and the voice is more powerful. Our body language shows the way we feel inside.

## Positive and negative thinking are both contagious.

All of us affect, in one way or another, the people we meet. This happens instinctively and on a subconscious level, through thoughts and feelings transference, and through body language. People sense our aura and are affected by our thoughts, and vice versa. Is it any wonder that we want to be around positive people and avoid negative ones? People are more disposed to help us if we are positive, and they dislike and avoid anyone broadcasting negativity.

Negative thoughts, words and attitude bring up negative and unhappy moods and actions. When the mind is negative, poisons are released into the blood, which cause more unhappiness and negativity. This is the way to failure, frustration and disappointment.

## Here are a few actions and tip to help you develop the power of positive thinking:

- Always use only positive words while thinking and while talking. Use words such as, 'I can', 'I am able', 'it is possible', 'it can be done', etc.
- Allow into your awareness only feelings of happiness, strength and success.



- Try to disregard and ignore negative thoughts. Refuse to think such thoughts, and substitute them with constructive happy thoughts.
- In your conversation use words that evoke feelings and mental images of strength, happiness and success.
- Before starting with any plan or action, visualize clearly in your mind its successful outcome. If you visualize with concentration and faith, you will be amazed at the results-
- Read at least one page of inspiring book every day.
- Watch movies that make you feel happy.
- Associate yourself with people who think positively.
- Always sit and walk with your back straight This will strengthen your confidence and inner strength-
- Walk, swim or engage in some other physical activity. This helps to develop a more positive attitude.
- Think positive and expect only favorable results and situations, even if your current circumstances are not as you wish them to be. In time, your mental attitude will affect your life and circumstances and change them accordingly.
- In order to turn the mind toward the positive, inner work and training are required. Attitude and thoughts do not change overnight
- Always visualize only favorable and beneficial situations. Use positive words in your inner dialogues or when talking with others.
- Smile a little more, as this helps to think positively. Disregard any feelings of laziness or a desire to quit. If you persevere, you will transform the way your mind thinks
- Once a negative thought enters your mind, you have to be aware of it and endeavor to replace it with a constructive one. The negative thought will try again to enter your mind, and then you have to replace it again with a positive one. In case you feel any inner resistance when replacing negative thoughts with positive ones, do not give up, but keep looking only at the beneficial, good and happy thoughts in your mind

It does not matter what your circumstances are at the present moment. Think positively, expect only favourable results and situations, and circumstances will change accordingly. It may take some time for the changes to take place, but eventually they do.

\*\*\*\*

**NABIN CHANDRA COLLEGE** is a Contact Centre for PG Correspondence courses under the Institute of Distance and Open Learning (IDOL) of Gauhati University.

Graduates can apply for admission to various courses of their choice in time.

**Contact No. : 03845-268153**

## "INTEGRITY" - A PILLAR OF WISDOM

Dr. N.U. Khadem  
Asstt. Prof. Deptt. of Economics

"Better to be hurt by the truth than comforted with a lie", a lie" Wrote khaled Hosseini in his bestseller "The kite Runner" "When you tell a lie, you steal someone's right to the truth. When you cheat, you steal the right to fairness". He goes on, to emphasize the meaning of integrity and honesty in his novel. I do agree with him and dare to say that the universe and mankind are made for truth and honesty.

This may sound somewhat ludicrous in an age where dishonesty and its numerous tentacles have ensnared the sea of life on earth, but it is a fact...it is a truth. A lie breaks itself upon the moral universe perhaps not today, not tomorrow but certainly at some point in the future. The tamils of south India have a saying. "The life of the cleverest lie is only eight days". The Germans too have a saying "lies have short legs". Similarly a saying was adopted during World War II, "Lies have one leg."

Governments, organisations and institutions which practice dishonesty and corruption will be broken from within. History has proven that. The Roman empire collapsed not from without but from within. Something dies in us the moment we lie, not the least our self-respect.

Integrity, truth and honesty is the cement that holds society together. They also add up to one thing and that is, 'Character' in our lives. Without Character all learning and knowledge is futile. Let us learn to be truthful and the seeds of honesty and Integrity will yield good fruits always...and always.

## LAUGHTER WINES

▶▶ **Teacher** : "Sam killed a person", convert it into future tense?

**Student** : He will go to jail.

▶▶ **Professor** : If you were in Africa and saw a Lion coming what steps would you take?

**Student** : The longest step I could.

▶▶ **Film Director (to the actor)** : You have to jump from a 10 storied building.

**Actor** : I will die if I jump from such a height.

**Film Director** : Don't worry, it is your last scene anyway.

▶▶ **Boy friend** : "You are the sunshine of my life, without you life is bad as a dreamy cloud. You alone reign in my heart like the cold wind in winter.

**Girl friend** : "Is this a proposal or a weather report".

▶▶ **Teacher** : How many of you want to go to heaven? All raised their hands except Manoj.

**Manoj** : Yes sir, but my mother told me to go straight home.

▶▶ **Teacher** : If your father gives your mother Rs. 200 and take back Rs. 150, what will your mother get?

**Vinod** : My mother will get angry.

▶▶ **Women (to conductor)** : Can the children travel on half ticket?

**Conductor** : Only if they are less than twelve.

**Women** : That's o.k. then, I've only nine children.

▶▶ **Raju** : "O God give me a room full of Gold".

**Ramu** : "O God give me a room full of diamond".

**Saju** : "O God give me a key of those rooms".

▶▶ **Wife** : "I had to marry you to find out how stupid you are".

**Husband** : "You should have known that when I asked you to marry me".

## IBNAL-MUQAFFA AND KALILA WADIMNA

Md. Hussain Ahmed  
Asstt. Prof. of Arabic

Ibnal- Muqaffa, though a resident of Basra, was originally from the town of Jur (or Gur) in the Iranian Province of fars. His father had been a state official in charge of taxes under the Umayyads, and after being accused and convicted of embezzling some of the money entrusted to him, was punished by the ruler by having his hand crushed, hence the name Muqaffa (Shrivelled hand). Ibn-al-Muqaffa was murdered around 756AD. by the order of the second Abbasid Caliph Abu J afar al- Mansur reportedly for heresy, in particular for attempting to import Zorostrian ideas into Islam. There is evidence, though, that his murder may have been prompted by the caliph 's resentment at the terms and language that Ibn-al-Muqaffa had used in drawing up a guarantee of safe passage for the caliph's rebellious uncle, Abdullah bin Ali; the caliph found that document profoundly disrespectful to himself, and it is believed Ibn al-Muqaffa paid with his life for the affront to al-Mansur.

Ibn al-Muqaffa was born in about 106 A.H. and cherished at Basra in princely manner. From his very childhood he was very curious for learning. He had a close friendship with Khalil binAhmad, the grammarian, from whom he acquired deep knowledge in Arabic language.

It is said that he embraced Islam only for the sake of worldly benefit. He was accused of heretic activities such as challenge to the Quran and translation of books of heretics and he was put to death by these anti Islamic activities.

Ibn al-Muqaffa's fame rest for his famous translated work kalila wa-Dimna from Middle Persian "is considered the first masterpiece of Arabic literary prose." He was a pioneer in the introduction of literary Prose narrative to Arabic literature. He paved the way for later innovators such as al-Hamadani and al-Saraqusti, who brought literary fiction to Arabic literature by adapting traditionally accepted modes of oral narrative transmission into literary Prose. Ibn al-Muqaffa was also an accomplished scholar of Middle person, and was the author of several moral fables.

Kalila wa Dimna: It is a translated work of Abdullah bin al-Muqaffa, and the origin of Kalila wa-Dimna was the Indian fables Panchatantra. In the Indian tradition, the Panchatantra is a nitisastra. Niti can be roughly translated as "The wise conduct of life, and sastra is a technical or scientific treatise; thus it is considered a treatise on political Science and human conduct. Its literary sources are thus "The expert tradition of political science and the folk and literary traditions of story telling." It draws from the Dharma and Artha Sastras, quoting them extensively. It is also explained that Niti represents an admirable attempt to answer the insistent question how to win the utmost possible joy from life in the world of men" and that niti is " The harmonious development of the powers of man, a life in which security, prosperity, resolute action, friendship and good learning are so combined to produce joy.

The panchatantra (five principles) is a collection of originally Indian animal fables in verse and Prose. The original Sanskrit work, which some scholars believe was composed in the 3rd century BCE. is attributed to Vishnu Sarma. However, it is based on older oral traditions including "animal fables that are as old as we are able to imagine. It is certainly the most frequently translated literary product of India, and these stories are among the most widely known in the world.

It is to be mentioned that the work panchatantra is recorded over two hundred different versions known to exist in more than fifty languages, and three-fourths of these languages are extra-Indian. As early as the eleventh century this work reached Europe, and before 1600 it existed in Greek, Latin, Spanish,

Italian, German, English, Old Slavonic and other Slavonic Languages. It was translated into Pahlavi in 570 CE by Borzuya. This became the basis for a syriac translation as Kalilag and Damnag, and it was translated into Arabic in 570 CE. by Persian scholar Abdullah Ibn al- Muqaffa as Kalila wa Dimnah, after the Muslim invasion of Persia, Ibnal al-Muqaffa's version emerges as the pivotal surviving text that enriches world literature. His work is considered a model of the finest Arabic prose style, and is considered the first master piece of Arabic literary prose.

Some scholars believe that Ibn al-Muqaffa's translation of the second section, illustrating the Sanskrit Principle of Mitra Laabha (gaining friends), became the unifying basis for the Brethren of Purity (Ikhwan al-safa) the anonymous 9th century CE Arab encyclopedists whose prodigious literary effort, Encyclopedia of the Brethren of sincerity, Indian, Persian and Greek knowledge. A suggestion made by Goldziher, and later written on by Phillip K. Hitti in his History of the Arabs, Proposes that "The appellation is presumably taken from the story of the ringdove in Kalila wa- Dimah in which it is related that a group of animals by acting as faithful friends to one another escaped the snares of hunter. This story is mentioned as an example when the brethren speak of mutual aid in one risala a crucial part of their system of ethies.

By the time the Sanskrit version of Kalila wa Dimna 'Panchatantra' migrated several hundred yrs through Pahlai into Arabic, a few important differences arose. The introduction and the frame story of the first book changed. The two jackels' names transmogrified into Kalila and Dimna. Further perhaps because of the bulk of the first section, or because the Sanskrit word "panchatantra" as a Hindu concept could find no easy equivalent in Zoroastrian Pahlavi, their names (Kalila and Dimna) became the generic, classical name for the whole work.

A Chapter was inserted by Ibn-al-Muqaffa after the first chapter, and tells of the trial of Dimna the jackel after he is suspected of intentionally leading to the death of the bull "Shanzabeh" Who is mentioned in the first chapter. The trial lasts for two days to no avail, until the tiger and the leopard come forward and accuse Dimna. He is subsequently put to rest.

The name of some animals are changed. The crocodile in the fourth chapter is changed to the Alghlim, the mongoose is changed to the weasel, and the Brahman becomes a "hermit"

Morals are added to each chapter i.e.

1. One must not accuse others falsely, and strive to Preserve friendship. .
2. (Added chapter) Truth is bound to be revealed, sooner or later.
3. Friends are an integral part of life.
4. Mental strength and deceit are stronger than brute force.
5. One must never betray friends, and should stay vigilant at all times.
6. One must never rush in making Judgments.

After it was translated into Arabic it was translated into various languages of the world, and almost all pre-modern European translations of the panchatantra arise from this Arabic version from Arabic it was translated into Syriac in the 10th or 11th Century into Greek in 1080, into Modern Persian by Abul Ma'ali Nasrullah Munshi in 1121 and in 1252 into Spain. It was translated into Hebrew by Rabbi Joel in the 12th century, this Hebrew version was translated into Latin by John of Capua as Directorium Humanae Vitae, or "Directory of human life" and became the source of most European versions. The Latin version was translated into Italian by Antonio Francisco Doni in 1552, and it became the basis for the first English translation, in 1570 sir Thomas North translated it into Elizabethan English as the fables of Bidpai.

Thus Kalila wa Dimna became the source of study for all language learner, and inserted in the syllabus of almost all the colleges and universities of India as a subject.



## EFFECTS OF WTO AGREEMENT IN INDIAN ECONOMY

Md. Ekbal Hussain Khadim  
B.Com part -II (Hons)

The Uruguay Round (UR) Agreement, General Agreement on Tariffs and Trade (GATT) was converted from provisional agreement into a formal international organization called **World Trade Organization (WTO)** with effect from January 1, 1995. WTO has come to play a very important role in the global and there by national economy. National economic policies are significantly influenced by the principle, policies and agreements of WTO. Because of this there are severe criticisms against WTO, particularly in the developing countries. In fact, WTO has both positive and negative impacts. The growing acceptance of WTO despite their short comings is evidenced by the increase in the number of member countries. WTO was started with 128 members which has increased to 151 member countries in May 2008 and a number of nations more have been negotiating membership. The WTO members now account for about 95% of the international trade indicating the potential. of the WTO in bringing about an orderly development of the international trade.

India, being a founder member of the WTO has been following the WTO decisions but as a consequence certain effects on the Indian economy have become evident. WTO has been urging India to lower import duties, remove controls on consumer goods imports, reduce quantitative restrictions etc. Under the Uruguay Round Agreement, India offered to reduce tariffs on capital goods, components, the tariffs have been reduced year after year to conform with the WTO provisions. The protection afforded by import duties, gradually disappeared, Indian industry had to face increasing competition from foreign goods. As a result Confederation of Indian Industry (CII) estimated that indigenous capital goods industry on a conservative estimate lost orders worth Rs. 5,000 crore from foreign countries. Instead of ensuring level playing indigenous industry has to pay excise, sales tax, octroi duty, turn over tax while imported goods are allowed duty-free access to our market. Not only the entire manufacturing industry is faced with a crisis, even machine tools industry, gensets and boiler producers are put at a serious disadvantage. Consequently, imports of finished products are displacing indigenously produced products. As a result, many industrial units are being closed and cheap imports have become an important cause of recession in Indian industry. Entry of foreign consumer goods in Indian market thereby seriously damaging Indian industry.

In recent years Chinese goods are flooding the Indian markets. They include battery cells, cigarette lighters, locks, car stereos, energy saving lamps, VCD players, wrist watches, tops, fans, electric ovens and large variety of consumer articles. Since China has become a member of the WTO, this is going to create another problem because action against Chinese dumping of goods can be taken only within WTO provisions. Not only that, Chinese goods are coming through normal channels of trade, they are also being smuggled via Nepal at zero duty. A very porous border from Nepal has increased clandestine imports from China. Both regular and clandestine imports from China are making serious forays into the Indian markets, thus hurting quite a large range of consumer goods industries. It is very difficult to prepare an anti-dumping case against China, since it is virtually impossible to obtain information required from Chinese sources due to non-transparent nature of Chinese economy.

Not only that, the entry of Multinationals in ordinary consumer goods like ice cream, agarbatti manufacture, food processing, mineral water etc. is also adversely affecting the small scale industrial (SSI) sector since these; were the traditional areas of this sector. In soft drinks, the entry of powerful Coca Cola and Pepsi have eliminated practically all small units engaged in the manufacture of aerated water. Multinational companies are not interested in hi-tech products. Rather they prefer low technology/ quick profit yielding and large volume products with regular demand throughout the year. In the name of consumer interest, Multinational Company's (MNC's) continue to swallow Small Scale Industries (SSI's) and eliminate them from the market.

The WTO agreement has seriously affected agriculture in India. According to the agreement, developed countries agreed to reduce subsidies by 20% over six years and developing countries by 13% over 10 years. In domestic support subsidies, developing country are not allowed to increase their negligible level of export subsidies while developed countries are allowed to maintain 64% of their subsidy outlays on the base level. Consequently, agricultural imports from developed countries are available at much below the market price, in the domestic economy. Earlier, Indian agricultural prices were lower than international prices mostly. But as a result of heavy subsidization of agricultural exports by developed countries, the situation is fast changing. Since "International agricultural Prices have become lower than domestic agricultural price", Indian farmers have been put to a serious disadvantage. The phenomenon of farmers' suicides and growing unrest in several states because of the distress of farmers specializing in agricultural commodities and their exports is a very severe human problem. So the sad plight of Indian farmers is due to WTO obligations.

As a member of WTO India get more benefit but as a developing country, India suffer many problem which adversely affect Indian Economy.

\*\*\*\*

## TRUE THOUGHTS OF LIFE

Suriya Y. Laskar  
B.Com. 2<sup>nd</sup> Year

1. Example is not the best way to teach. It's the only way.
2. All things are difficult before they are easy.
3. The fulfillment of your dreams lies within you & you alone.
4. It's your imagination that can take you everywhere.
5. An opportunity lies in the middle of any difficulty.
6. In great attempts. It's even glorious to fail.
7. Success in not everything. It's the only thing.
8. Big lessons of life are learnt from little mistakes.
9. Soar high & keep your legs on the ground.
10. The positive thinkers create a majority.
11. Education is that cosmetic by means of which one can make himself/herself genius.

## CONSUMER ATTITUDE AND CULTURE PENETRATING IN OUR COUNTRY

Mohammad Tahir Ahmed  
B.Com. Part -II

Culture affects consumer attitudes in shaping quality/price relationships. Consumers of different cultures may use different cues and may use cues differently in evaluating product qualities. Though in the fixed MRP regime in India, you don't see evidence of it so clearly, some differences in the unbranded apparel market clearly show up, a product that cost Rs. 500 say in Delhi may cost one third of it in a city like Guwahati.

But clearly the most spatially relevant dimensions of marketing strategy are distribution and advertising. One finds large differences in channel organization, channel structure, channel length as well as inter-channel relationships across geographies.

Clear examples are the reflected evolution of organized retail formats in the South much before and for more successfully than in the North and to a certain extent in West by certain super-market players. Even traditional trade is very different -, the North trade though some what different is more relationship based than in the West which is more money, and ROI oriented than the East which is more laidback and the South which is perhaps the more professional of the lot. Traditional product patterns and product advertisement differ across countries.

Surely, a burning example spots i.e. branded atta promotions are far more hard -hitting and competitive in North India than in South as because: The South eats rice.

Basically, therefore, for marketers the critical decision is whether utilizing a standardized marketing strategy in any given market will result in a grater return on investment than would as individualized campaign.

Thus the irony underlying is the elucidate discussion of the culture and consumer attitude under the platform of consumer forum.

### SOME INTERESTING QUESTIONS

Suriya Y. Laskar  
B.Com. 2<sup>nd</sup> Year

- |   |   |
|---|---|
| 1. Who is the best teacher in the world?<br><i>Ans : Experience.</i>    | 6. What is the sweetest thing in the world?<br><i>Ans : Love &amp; only Love.</i> |
| 2. What is the most loveable thing in the world?<br><i>Ans : Beauty</i> | 7. What is the root of all passions & violent emotion?<br><i>Ans : Desire.</i>    |
| 3. What is the easiest way to reach god?<br><i>Ans : Meditation.</i>    | 8. What is that if it lost we never find again?<br><i>Ans : Character.</i>        |
| 4. What is easy to give but difficult to take?<br><i>Ans : Advice</i>   | 9. Which room does not have windows, doors & rooms?<br><i>Ans: Mushroom?</i>      |
| 5. What is the most powerful enemy of us?<br><i>Ans : Our mind.</i>     | 10. Which Dress we can't wear?<br><i>Ans : Address?</i>                           |

## Examination is Cricket Match

Imdad Hussain  
T.D.C. 1st Semester

Examination is a cricket match  
Candidates are batsmen  
Paper setter is the bowler  
Examiner is an umpire  
Examination hall is a stadium  
Pen is a bat  
Question paper is an over  
Difficult question is a googly  
Confusing question is spin  
Good question is good batting  
To solve the question, without stopping is a sixer  
To think and then write answer is four  
To stop after showing half question paper is run out  
To be caught while taken out a chit from pocket is LBW  
Solving only one question is stump out  
Blank answer sheet is clean bowled  
Good position is the man of the match award  
Distinction is century  
To just pass a victory  
To fail is to lose the match



### Rules of Accounts in my life

M. Alom Suman  
B.Com. P-II (Hons)

My birth is my 'Opening stock'  
My ideas are my 'Assets'  
My views are my 'Liabilities'  
Happiness is my 'Profit'  
Sorrow is my 'Loss'  
Soul is my 'Good will'.  
Heart is my 'Fixed assets'.  
Duties are my 'Outstanding Expenses'.  
Friendship is my 'Hidden adjustment'  
Character is my 'Capital'  
Good things are my 'Appreciation'  
Bad things are my 'Depreciation'.  
Knowledge is my 'Investment'.  
Mind is my 'Bank balance'  
Thinking is my 'Current Account'  
Behaviour is my 'Journal entry'.  
My aim is to tally the 'Balance sheet'.  
Death is my 'Closing Stock'.



### FRIENDSHIP

Sachin Kanu & Sayantan Chanda

Dear O Dear, U r not near;  
But I can hear, don't get fear;  
Ur memories here, Live with cheer;  
No more tear, my friend ...  
... U r always my Dear ...



## How will you succeed

Sarita Rai  
B.Com.Part-III

Read, but write more  
Talk, but think more  
Play, but study more  
I promise, you will succeed sure.  
Eat, but chew more  
Weep, but laugh more,  
Sleep but work more  
I promise you will succeed sure.  
Punish, but pardon more,  
Spend, but save more,  
Consume, but produce more  
I promise you will succeed sure.



## MY DREAM

Rosalin Sahoo  
B.Com.Part-III

I saw a dream,  
In the screen, in which  
I was eating an ice-cream  
While watching movie  
I saw a monster,  
Who came out of the screen  
All the people began to scream.  
He ate all my ice-cream,  
And began to lick the cream  
Just I wake up and  
Saw it was just a dream.  
God God! I only had a dream.

## The Examination

Nirma Giri  
B.Com. Part -III

Its again the Examination  
You should have good preparation  
You should put your all concentration because  
Maths is all about calculation.  
Chemistry is all about classification.  
History is all about civilization.  
Geography is for counting population.  
What a boring Examination.  
I would write an application to the school.  
To abolish the examination.

## The Morning

Eunice Gomes  
B.Com. 3rd Yr.

The sun is rising  
In the east;  
It dispels darkness  
And the mist.  
Sweet wind is blowing.  
Calm and cool.  
Soft water is flowing  
In the pool.  
The birds of prey  
Are no more seen.  
Some chickens are pecking  
In front of an inn.  
Many flowers of beauty  
Have bloomed in the park.  
And quite enchanting  
Is the lark singing.  
Sparrows are busy  
In search of grain.  
How fine is the morning,  
so full of beauty,  
All agents of nature,  
Are on duty.



## LUCK

Nirma Giri  
B.Com.Part-III

He worked by day  
And toiled at night  
He gave up play  
And some delight.  
Dry books he read,  
New things to learn  
And forged ahead,  
Success to earn.  
He plodded on with  
Faith and pluck;  
And when he won,  
Men called it luck.



## MOTHER

Abdul Mukit  
H.S. - I st Yr

Mother! Mother! I Love you  
Where you are living.  
I don't see the again.  
O! I know! You are living.  
Happily in the garden of heaven.  
Will you come to see me again?  
... Ho! Ho! I smile sound comes  
From behind.  
Don't think for me  
I am living remain happily.  
But I pray to God.  
To live the joly  
Who goes from the earth.  
But never comes again.  
Mother! Mother! I Love you



## EDUCATION AS AN ACRONYM

S. Jasmin Laskar  
B.Com. Part -I

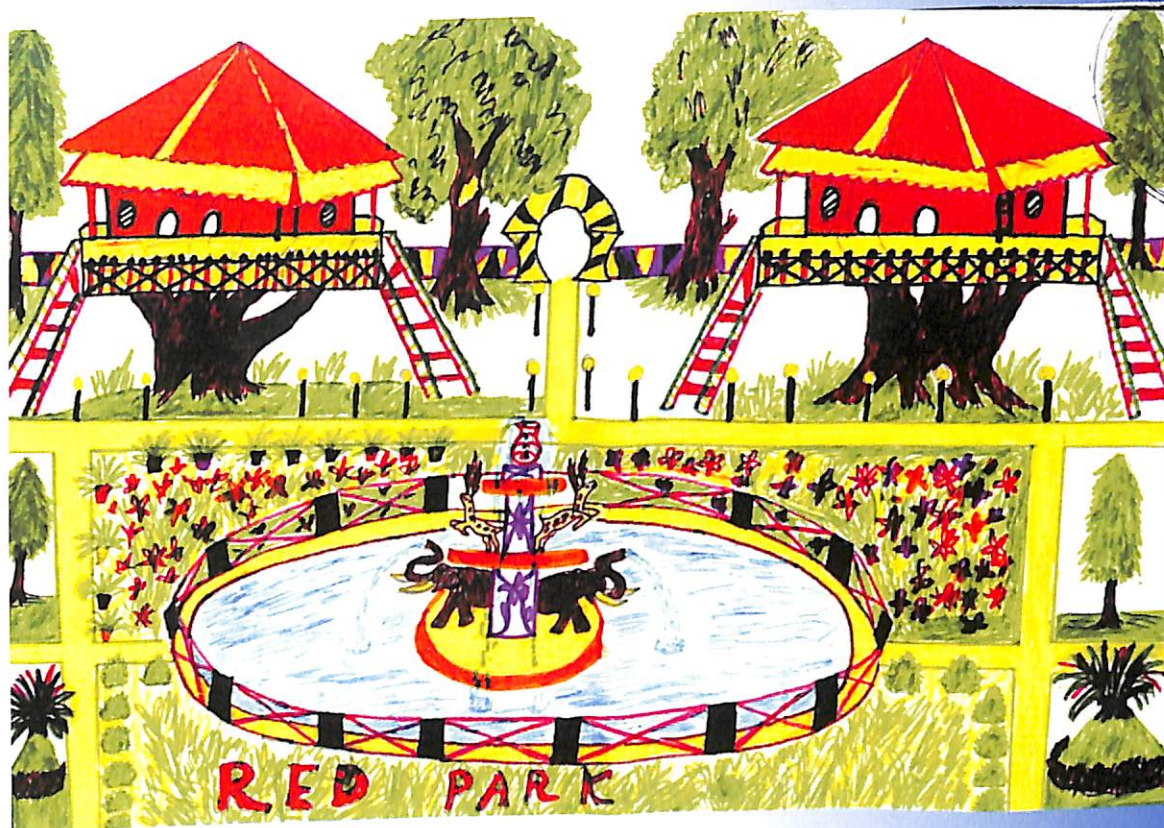
**E**ducation is an instrument for inner change  
**D**evelopment of talents gifts and qualities  
**U**ltimate aim is the formation of character  
**C**ontinuous process of growth  
**A**ll round and harmonious blossoming of the person  
**T**ransformation of person through love and service  
**I**mbibing positive attitudes from live experiences  
**O**pening the heart and mind to wisdom and knowledge  
**N**ever ending acquisition of values.

## TO MY SENIORS

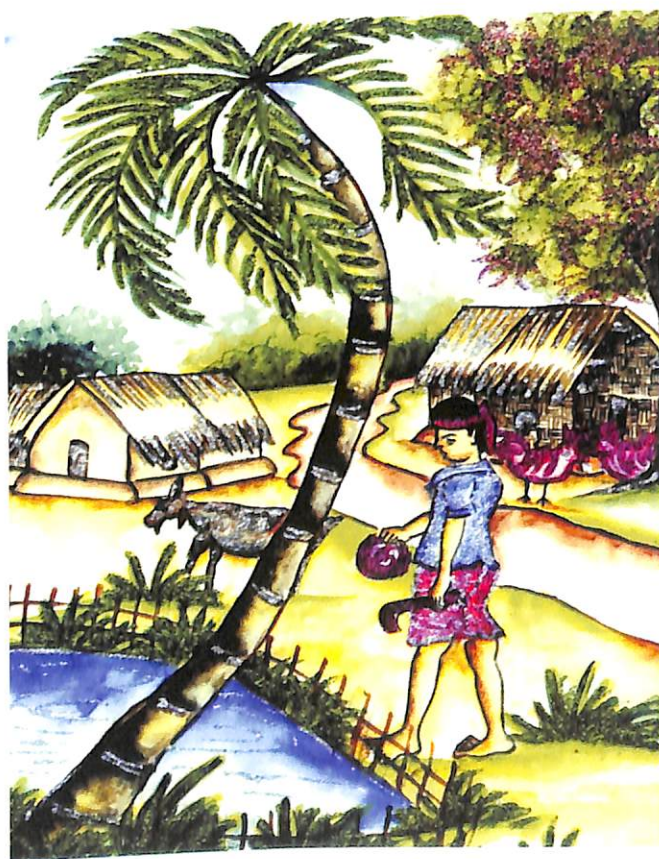
Payel Dey  
B.Com. Part -III

Oh! My dear friends,  
We always remember those days,  
When all of you were there.  
The school was like fare  
Like fresh flowers in garden  
You spread smell in air.  
Gossip was enjoyable when  
All of our were there,  
You brigade was an example  
Of honesty and vigorous principle  
Your guidance, leadership and command  
Gave a new light in our mind  
Your exit is a natural law  
To which we all must bow  
Now you are on the threshold  
To enter into a new world  
We shall try to follow yours ways  
And shall carry on the sunny days.

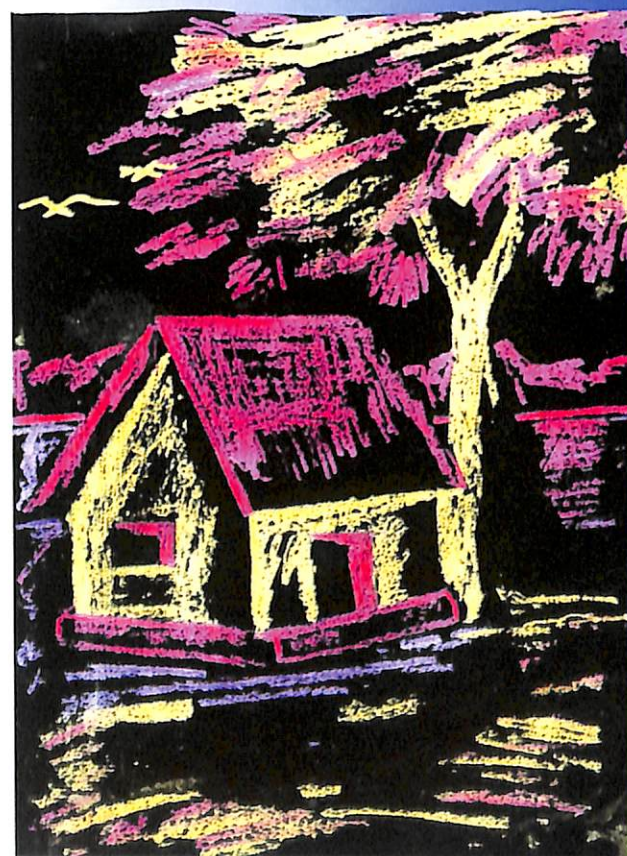




Amina Mazumder, H.S. 1st year



Sushmita Das, H.S. 1st year



Rajesh Kumar Das, T.D.C. III yea (Arts)r





Tanuka Dasgupta,  
H.S. 1st year (Arts)